जून 2006
Rs. 13 /-
चन्दामामा

बच्चों के लिए भारत का सबसे बड़ा टेलेंट हंट

हंगामा टी वी पेश करते हैं ओरल-बी 'जॉन और कौन', अपनी तरह का सबसे पहला टेलेंट हंट! इसमें 7 से 14 साल की उम्र का एक लड़का और एक लड़की जॉन एब्राहम के साथ हिन्दी फ़िल्म में एक्टिंग करेंगे; प्रत्येक विजेता को मिलेगा रु. 5 लाख और कैरियर मैनेज करने के लिए यू टी वी के साथ 3 साल का कॉन्ट्रैक्ट !*

*शर्तें लागू.

अभी से महसूस करने लगे हो खुद को स्टार? तो उठाओ पेन और पेपर और नीचे दी गई जानकारी भरकर अपनी एंट्री भेजो :
(in english block letters)

- First Name • Middle Name • Surname
- Date of Birth [dd/mm/yy] • Parent / Guardian's Name
- Address • City • Pin Code • Tel. Nos.
- Choose your center for audition (if short listed)
- Mumbai • Delhi • Kolkata • Ahmedabad • Hyderabad
- Why should I be chosen to act with John Abraham? (25 words max)
- Demand draft no.: • Bank:
- Please write the following statement and sign as indicated:

We have read, understood and agree to abide by all the Rules & Regulations# of the contest as amended from time to time.

Participant's signature   Parent / Guardian's signature

यहाँ लॉग-ऑन करें : johnaurkaun.indiatimes.com

कृपया इस फ़ार्म के साथ अपने हाल ही के 4 इंच X 6 इंच कलर फ़ोटो (एक चेहरे का क्लोज़-अप और दूसरा पूरी लंबाई में) और प्रक्रिया शुल्क के रुप में रु. 500/- का डिमांड ड्राफ़्ट या बैंकर्स चैक, जो **'UTV HUNGAMA A/c, OBC, Bandra branch'** के नाम जारी तथा मुंबई में देय हो. निम्नलिखित पते पर भेजें : **"John Aur Kaun, Post Bag No. 102, Azad Nagar Post Office, Mumbai - 400053".**

आप चाहे तो अपना एंट्री फ़ार्म नजदीकी प्लैनेट-एम, आयनॉक्स मल्टीप्लैक्स से ले सकते हैं या फ़ार्म डाउनलोड करने के लिए johnaurkaun.indiatimes.com पर लॉग-ऑन करें. फ़ार्म संबंधी जानकारी के लिए आप (022) - 26330505 या 1234 नंबर पर भी (रिलायंस मोबाइल सब्सक्राइबरों के लिए) फ़ोन कर सकते हैं,

अधिक जानकारी के लिए देखते रहें हंगामा टी वी!

hungama

Co-Presenting Sponsors:

Associate Sponsors:

Prize Sponsor:
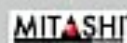
Beverage Sponsor:

Telecom Partner:

Radio Partner:
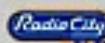
News Partner:

Powered by: indiatimes.com

चन्दामामा

सम्पुट-५७ जून २००६ सञ्चिका - ६

अंतरंग

विशेष आकर्षण

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal,
Chennai - 600 097
E-mail :
subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये।
भारत में बुक पोस्ट द्वारा बारह अंक १५० रुपये।
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड' के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

सूर्य-सम मनोवृति

छुट्टियाँ लगभग खत्म हो गईं। तुम याद करते हो कि कैसे कक्षा में गये बिना चिन्तामुक्त छः सप्ताह निकल गये।

भावशून्य होकर गवाक्ष से बाहर देखते समय किसी शिथिल क्षण में क्या तुम कभी ऐसी आकांक्षा से अभिभूत हो गये हो कि स्कूली जीवन के कठिन अनुशासन से कैसे छुट्टी मिले?

शीघ्र ही तुम अपने मन के सभी सन्देहों से पीछा छुड़ा लेते हो और स्कूल में एक और महत्वपूर्ण वर्ष के बारे में कुछ सकारात्मक विचारों का आह्वान करते हो जो न केवल व्याख्यान सुनना, नोट्स लिखना, पाठ्य पुस्तकें पढ़ना, गृहकार्य करना और एक के बाद एक परीक्षाओं से गुजरने की मशीनी दिनचर्या से सम्बन्धित होते हैं, बल्कि साथ ही, कुछ रोचक व महत्वपूर्ण घटित होने की आशा भी रखते हो।

इन सब का सारांश एक शब्द में समाहित है- मनोवृति। तुम्हें एक मनोवृति अवश्य विकसित करनी चाहिये, विगत वर्ष से अधिक सीखने की, अपने चरित्र को उन्नत बनाने की, अपने परिवार, समाज, समुदाय तथा देश की सेवा करने के लिए अपनी अन्तर्निहित प्रतिभाओं को विकसित करने की।

स्वामी रामतीर्थ (१८७०-१९०६) एक योगी थे और उससे भी अधिक एक देशभक्त। वे प्रत्येक व्यक्ति को ''सूर्य के समान मनोवृति— एक निर्भीक की, अविराम दाता की -विकसित करने का उपदेश देते हैं; जो बिना पारितोषिक की आशा के सेवा करता है, एक मुक्त-प्रेमवश ज्योति और जीवन प्रदान करता है, प्रभु की गरिमा के समान दिव्य कान्ति में निवास करता है और सबसे अधिक, स्वार्थपरता से मुक्त एक व्यक्तित्व का बोधक है....''

नये शैक्षिक वर्ष में तुम्हारे लिए यह कितना उदात्त विचार है।

सम्पादक : विश्वम

पाठकों का पन्ना

पिछले पैंतालीस सालों से सुंदर ''चन्दामामा'' का पाठक हूँ। पिछले पैंतीस सालों से मनोहर ''चन्दामामा'' को सुरक्षित रखनेवाला संग्रहकर्ता हूँ। पिछले बीस सालों से ''चन्दामामा'' में कहानियाँ लिखता हुआ रचयिता हूँ। बचपन से ही ''चन्दमामा'' में कहानियाँ लिखने का मुझे भाग्य मिला है। कभी-कभी पुराने ''चन्दामामा'' के पन्नों को पलटता हूँ तो मन प्रफुल्लित हो जाता है। यह अनुभूति वर्णानातीत है। परोपकारी पापाजी की कहानियाँ, मोटे भीम की कहानियाँ, अरेबियन नाइट्स की कहानियाँ नित्य नूतन हैं। नये पाठकों के लिए पुनः इन्हें प्रकाशित कीजिये। उन्हें भी इसका मज़ा लेने दीजिए। ''चन्दामामा'' की साठवीं वर्षगांठ पर मेरे हार्दिक अभिनंदन। और सौ सालों तक यह यात्रा करता रहे, इसकी आशा करते हुए।

-राम नारायण द्विवेदी, बनारस

दिन ब दिन ''चन्दामामा'' पतला होता जा रहा है। ऐसे-ऐसे शीर्षक की कहानियों से भरता जा रहा है , जिनमें रसीलेपन की कमी है।

- शंकर जोशी, नागपुर

''चन्दामामा'' में आप जिस ''भयंकर घाटी'' धारावाहिक प्रकाशित करते आ रहे हैं, वह पठनीय है। मन में गुदगुदी पैदा करता है। १९६८ में आपने ''शिथिलालय'' नामक एक धारावाहिक प्रकाशित किया था। कृपया एक और बार उसे प्रकाशित कीजिये।

- सुगुणा, बंगलोर

मैं चंदामामा का बहुत पुराना पाठक हूँ। तब से जब इसमें पंचतन्त्र, हितोपदेश आदि की कहानियाँ प्रकाशित होती थीं। मुझे याद है, इसमें श्री पी.सी. सरकार जादूगर की मजेदार कहानियाँ भी छपती थीं। पत्रिका का प्रमुख आकर्षण इसमें छपनेवाले रेखाचित्र हैं जो सृजन 'चित्राजी' कर गए हैं, वह तो चंदामामा की धरोहर है। पत्रिका के वर्तमान स्वरूप में थोड़ा परिवर्तन अवश्य आया है, परन्तु शुक्र है इसने अपनी समृद्ध परंपरा को नहीं छोड़ा। आगामी अंक और निखर और मुखर कर सामने आए यही तमन्ना है।

- हरदेव कृष्ण शर्मा, हरयाणा

तिल का ताड़

अशर्फीलाल, धनपुर का निवासी था। वह ब्याज का व्यापारी था। लोग कहते थे कि वह बड़ा निर्दयी है। महावीर नामक एक धनाढ्य उसके बारे में कहा करता था, ''अशर्फीलाल को देखकर यह जानिये कि आदमी को कैसा होना नहीं चाहिये। इसीलिए बिना ब्याज के मैं कर्ज देता रहता हूँ। गुप्त दान करता रहता हूँ।''

महावीर उस गाँव के लोगों को वचन दे चुका था कि लाखों अशर्फियाँ जो मुझे मिलनी हैं, अगर वे वसूल हो जाएँ तो उसमें से उस गाँव के मंदिर और पाठशाला को दस-दस हज़ार अशर्फियाँ दान में दूँगा। परंतु कुछ लोगों का यह कहना है कि जो उससे कर्ज़ माँगते हैं, कोई न कोई बहाना बनाकर बात को टाल देता है। न ही कर्ज़ के रूप में या दान के रूप में किसी को भी कुछ नहीं देता। बहुत से लोगों की यह राय थी कि महावीर तिल का ताड़ बनाता है, बढ़ा-चढ़ाकर बातें करता है, पर करता कुछ भी नहीं है। पर सूरज नामक एक गरीब किसान उसका विश्वास करता था, उसे महा परोपकारी मानता था । इसी विश्वास पर वह अपनी बेटी की शादी के लिए सौ अशर्फियों का कर्ज़ माँगने उसके पास गया।

महावीर ने कहा, ''परसों ही मैंने तीन हजार अशर्फियों का दान दिया। कल एक और को ब्याज लिये बिना दस हज़ार अशर्फियाँ कर्ज़ में दीं। आज मेरे पास दस अशर्फियाँ भी नहीं हैं । यह तुम्हारा दुर्भाग्य है।''

लाचार होकर सूरज अशर्फीलाल के पास गया। उसने इस शर्त पर धन दे दिया कि एक साल के अंदर यह रक़म लौटायी नहीं गयी तो वह और उसकी पत्नी लक्ष्मी उसके घर में बेगारी करेंगे। सूरज ने यह शर्त मान ली । लेकिन उस साल अच्छी फसल नहीं हो पायी, इसलिए वह रक़म समय पर उसे लौटा नहीं पाया।

अशर्फीलाल का कर्ज़ चुकाने के लिए सूरज ने पुनः महावीर से कर्ज़ माँगा। महावीर ने सोच-विचार के बाद कहा, ''दूसरों की सहायता लेकर कब तक ज़िन्दगी बिताते रहोगे? अशर्फीलाल के यहाँ बेगारी करने चले जाओ। तुम्हें आजन्म खाने, कपड़े की चिंता करनी नहीं पड़ेगी।''

''साहब, मैं और मेरी पत्नी बेगारी करने को सन्नद्ध हैं। परंतु मेरा बेटा शेखर इसके ख़िलाफ़ है। वह थोड़ा-बहुत पढ़ा-लिखा है। कहता है, व्यापार करके कमाऊँगा और ऋण चुका दूँगा। इस बीच, मुझे आपकी मदद चाहिये।'' ''तो एक काम करना। शेखर को मेरे सुपुर्द करना और तुम अशर्फीलाल के यहाँ नौकरी पर लग जाना। उसे बड़ा बनाऊँगा और तुम्हें बेगारी से मुक्त करूँगा। तब गाँव के सब लोग तुम्हारे पुरुषार्थ की प्रशंसा करेंगे। यों मैंने दस परिवारों की सहायता की। तुम ग्यारहवें परिवार के हो।'' महावीर ने कहा।

सूरज ने शेखर को उसके सुपुर्द कर दिया और बेगारी करने पत्नी समेत अशर्फीलाल के यहाँ पहुँच गया। शेखर ने व्यापार शुरू करने के लिए महावीर से हज़ार अशर्फियाँ माँगी। ''हज़ार क्या, लाख अशर्फियाँ दूँगा। लेकिन किसी की दी हुई पूंजी से व्यापार में उन्नति नहीं होती। अक़्लमंदी ही, व्यापार की पूंजी है। हाल ही में मैंने पुराणिक, रंगा और भद्र नामक तीन गरीबों को आश्रय दिया, पढ़ाया-लिखाया। शादियाँ भी करवायीं। व्यापार करने के लिए हर एक को हज़ार अशर्फियाँ दीं। एक साल के अंदर ही वे फिर से मेरे पास धन के लिए आये और कहने लगे कि व्यापार में नुक़सान हुआ है। मैंने धन देने से इनकार किया तो वे जनपुर गये और व्यापार करके लाखों रुपये कमाये। परंतु मुझे फूटी कौडी भी नहीं लौटायी।'' महावीर ने कहा।

शेखर ने कहा, ''मैं ऐसे लोगों में से नहीं हूँ। जो रकम आप देंगे, उसे ब्याज सहित लौटाऊँगा।''

महावीर ने मुस्कुराते हुए कहा, ''मैं थोड़े ही ब्याज लूँगा। रक़म वापस किसी और की सहायता करने के उद्देश्य से ही लेता हूँ। तुम भी जनपुर जाना, उन तीनों से मिलना। अपनी बुद्धि व चालाकी को उपयोग में लाना और जितनी रक़म तुम उनसे वसूल कर सकते हो, वसूल कर लेना। उसी को पूंजी मानकर व्यापार शुरू कर देना।

जब कमाओगे तब मेरी रक़म मुझे लौटा देना।''

शेखर जनपुर गया। पहले वह भद्र से मिला और जो हुआ, उससे कहा। भद्र का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। उसने कहा, ''महावीर तिल का ताड़ बना रहा है। जानते हो, असल में उसने पुराणिक, रंगा और मुझे क्या दिया? एक-एक को तीन-तीन अशर्फ़ियाँ। पहली अशर्फ़ी पढ़ाई के लिए, दूसरी बिवाह के लिए, तीसरी व्यापार के लिए।''

शेखर ने कहा, ''रक़म बसूल करने मैं तुम्हारे पास नहीं आया हूँ। महावीर की बातों का विश्वास करके मेरे माता-पिता बेगारी कर रहे हैं। मैं यह जानना चाहता था कि कहाँ तक उसकी बातों का विश्वास किया जाए, इसीलिए आप तीनों से मिलने आया। अब उसे सबक़ सिखाकर ही रहूँगा।''

भद्र ने कहा, ''तुम अगर उसे सबक़ सिखाने का वचन दोगे तो मैं तुम्हें अपने व्यापार में भागीदार बनाऊँगा। परंतु, इसके पहले तुम्हें एक काम करना होगा। एक हफ्ते के अंदर तुम्हें अपने माँ-बाप को बेगारी से छुटकारा दिलाना होगा और अपनी बुद्धिमानी को साबित करना होगा।''

इसके बाद शेखर रंगा से मिला और जो हुआ, बताया। रंगा ने अपने क्रोध को काबू में रखते हुए कहा, ''तुम अगर महावीर को सबक़ सिखाने का वादा करोगे तो मैं तुम्हारे माँ-बाप को बेगारी से मुक्ति दिलवाऊँगा। इसके लिए तुम्हें एक हफ्ते के अंदर किसी अच्छे परिवार की लड़की से शादी

करनी होगी और अपनी अक़्लमंदी को साबित करना होगा।''

आख़िर में शेखर पुराणिक से मिला। उसकी पत्नी उसके पचासवें साल में मर गयी थी तो उसने दूसरी शादी कर ली। बेटी बालिग हो गयी। वह चाहता था कि जल्दी उसकी शादी कर दी जाए, क्योंकि सौतेली माँ और उसके बीच हर दिन झगड़े हुआ करते थे। शेखर को देखते ही पुराणिक को वह योग्य व समर्थ लगा। अपनी बेटी की शादी उससे करने की इच्छा उसमें जगी। इसलिए उसने कहा, ''अपनी बेटी से तुम्हारी शादी कराऊँगा। परंतु हफ्ते के अंदर तुम्हें महावीर को सबक़ सिखाना होगा और अपना चातुर्य साबित करना होगा।'' उसने यों शर्त रखी।

शेखर सोच में पड़ गया। खूब माथापच्ची करने के बाद उसे एक उपाय सूझा। उसने पुराणिक से बताया तो वह बेहद खुश हुआ। उसने उसे तीस अशर्फियाँ दीं। शेखर धनपुर लौटा और महावीर से कहा, ''पुराणिक, रंगा और भद्र का कहना है कि आपसे हर एक ने तीन-तीन अशर्फियाँ ही लीं। ब्याज सहित आपको देने तीस अशर्फियाँ देकर उन्होंने मुझे जबरदस्ती भेजा। उन्होंने यह भी कहा कि आप इन अशर्फियों को स्वीकार नहीं करेंगे तो वे इस गाँव में आकर बखेडा खड़ा कर देंगे?''

यह कहते हुए उसने तीस अशर्फियाँ उसके हाथ में रख दीं। महावीर को सचमुच ही लगा कि वे तीनों यहाँ आयेंगे और बखेड़ा खड़ा कर देंगे। उसने शेखर से कहा, ''यह बात किसी और से मत कहना।''

''आप मेरे आदर्श हैं। मैं आपके कहे अनुसार ही करूँगा।'' शेखर ने कहा। महावीर बहुत प्रसन्न हुआ। इसके बाद शेखर गाँव के चंद प्रमुखों से मिला और कहा, ''यह झूठ है कि महावीर तिलका ताड़ बनाते हैं। सचमुच ही किसी को तीस हज़ार अशर्फियाँ देकर वे चुप बैठे हैं। मैंने वह रक़म बडे प्रयास के बाद वसूल की। ब्याज सहित लाख रुपये अब उन्हें मिल गये। इसपर प्रसन्न होकर उन्होंने मेरे माँ-बाप को बेगारी से मुक्ति दिलाने का वचन दिया। मुझे नौकरी दिलवाकर, मेरी शादी कराने का भी उन्होंने वादा किया। अब मुझे किसी बात की चिंता नहीं।''

यह समाचार महावीर को भी मालूम हुआ। वह घबरा गया और शेखर को बुलाकर कहा, ''तुमने मुझे तीस अशर्फियाँ ही दीं। गाँव में लाख बताया। मैंने तुम्हारे उपकार के विषय में कुछ भी नहीं कहा। परंतु गाँव में तुमने बताया कि मैं तुम्हारा उपकार करनेवाला हूँ। तुम चाहते हो कि दान-धर्म के नाम पर लोग मुझे लूटें। मैं तुम्हारी शरारत कामयाब होने नहीं दूँगा। तुमने जो झूठ कहे, सबको बता दूँगा।'' उसने धमकाया।

तब शेखर ने विनयपूर्वक कहा, ''मैं आपसे कह चुका हूँ कि जो भी कहूँगा, आपके कहे अनुसार ही कहूँगा, करूँगा। फिर आपने पुराणिक, रंगा और भद्र को तीन-तीन अशर्फियाँ दीं और गाँव भर में ढिंढोरा पीटा कि उन्हें दस-दस हज़ार अशर्फियाँ दीं। इसका यही मतलब हुआ ना कि तीन अशर्फियाँ लाख अशर्फियाँ हैं। तिल का ताड़ बनाना आपकी पद्धति है। मैंने भी यही पद्धति अपनायी। सोचा कि आप मेरी तारीफ़ करेंगे। मेरी बातें ठीक नहीं लगीं तो गांव भर में बता दीजिये।''

शेखर का कहा झूठ है, यह बता दिया जाए तो उसी का राज़ खुल जायेगा। इसलिए वह चुप हो गया। यही नहीं, पहले गाँव के मंदिर और पाठशाला को दस-दस हज़ार अशर्फियाँ दान में देने का जो वचन दिया, उसे पूरा किया। अपने ही आप बडबडाने लगा, ''अब बुद्धि ठिकाने आ गयी। आगे तिल का ताड़ बनाकर कहने की आदत से दूर रहूँगा।''

इतने में पुराणिक, रंगा और भद्र घनपुर आये। महावीर को सबक़ सिखाया, यह जानकर खुश हुए। भद्र ने शेखर को अपने व्यापार में हिस्सा दिया। रंगा और भद्र ने अशर्फीलाल का कर्ज़ चुकाकर सूरज दंपति को बेगारी से मुक्ति दिलायी। पुराणिक ने अपनी बेटी से उसकी शादी करायी।

जनपुर जाने के पहले शेखर ने एक बड़ी दावत दी और कहा, ''मेरे जीवन में आज कायापलट हो गया, इसका कारण महावीर ही हैं।''

''अरे शेखर, तिल का ताड़ न बनाओ। यह ठीक आदत नहीं है।'' पीछे से महावीर चिल्लाया।

बाल विशेषांक (नवम्बर'०६)

तुम सबने अप्रैल २००६ अंक में घोषणा अवश्य देखी होगी

पुरस्कार राशि: ***कहानी:*** प्रत्येक प्रकाशित कहानी पर ५०० रु.

चित्रकला : प्रथम पुरस्कार ५०० रु; द्वितीय पुरस्कार ४०० रु.

तीन सान्त्वना पुरस्कार-प्रत्येक २०० रु.

- ❖ तुम्हारी कहानी उन १३ भाषाओं में से किसी एक में हो सकती है, जिनमें चन्दामामा पत्रिका प्रकाशित होती है।
- ❖ चित्रकला का सारांश भी इनमें से किसी एक भाषा में हो सकती है।
- ❖ तुम्हारी प्रविष्टि निम्नलिखित कूपन के साथ आनी चाहिये। फोटो कापी स्वीकृत नहीं की जायेगी।

मैं निम्नलिखित प्रविष्टि प्रेषित करना चाहता/चाहती हूँ:

कहानियाँ : *शीर्षक :* १. ________________
२. ________________

चित्रकला : विषय: १. ________________
२. ________________

नाम ________________

जन्मदिन ________ कक्षा ________ विद्यालय ________

____

निवास पता ________________

________________ पिन कोड ________

प्रमाणित करता/ करती हूँ कि ये प्रविष्टियाँ मेरी/मेरे पुत्री/पुत्र की किसी की मदद के बिना स्वरचित मौलिक कृतियाँ हैं।

अभिभावक **प्रतियोगी**

भयंकर घाटी

10

(गुप्त मार्ग धुएँ से भर गये, तो ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक बाहर आ गया। उसने अपने शिष्यों को डराकर भाग निकलने की सोची। पर वह भाग न सका। वह बाहर आया ही था कि राजगुरु द्वारा पकड़ लिया गया। राजगुरु ने आज्ञा दी कि उसे बाँस से लटकाकर शहर ले जाया जाये। इसके बाद—)

सेनापति के भेजे हुए सैनिक ने नगर में कुछ ढोल पीटनेवालों को इकट्ठा किया और उनसे ढोल पिटवाना शुरू किया।

यह सुन सबको खुशी हुई कि जो मान्त्रिक जंगलों में रहकर ब्रह्मापुर के नागरिकों को तंग कर रहा था, वह पकड़ा गया है।

यह घोषणा सुनते ही लोगों के झुण्ड जमा हो गये और उत्सव मनाने लगे। बहुत से लोग ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक को देखने के लिए नगर के द्वार पर गये।

द्वार से पहले पहल राजगुरु आया। लोगों ने पहले ही जान लिया था कि उसके शक्ति - सामर्थ्य के कारण ही मान्त्रिक पकड़ा गया है। इसलिए उसका उन्होंने खूब स्वागत किया। सबने उसका जय जयकार किया। थोड़ी देर बाद सेनापति फिर उसके बाद सैनिक बाँस पर मान्त्रिक को ढोकर नगर के द्वार के समीप आये।

मान्त्रिक को देखकर लोग हँस हँस कर शोर करने लगे। कई ने मान्त्रिक की चोटी पकड़कर हिलायी। कुछ उसे कोसने, पीटने लगे।
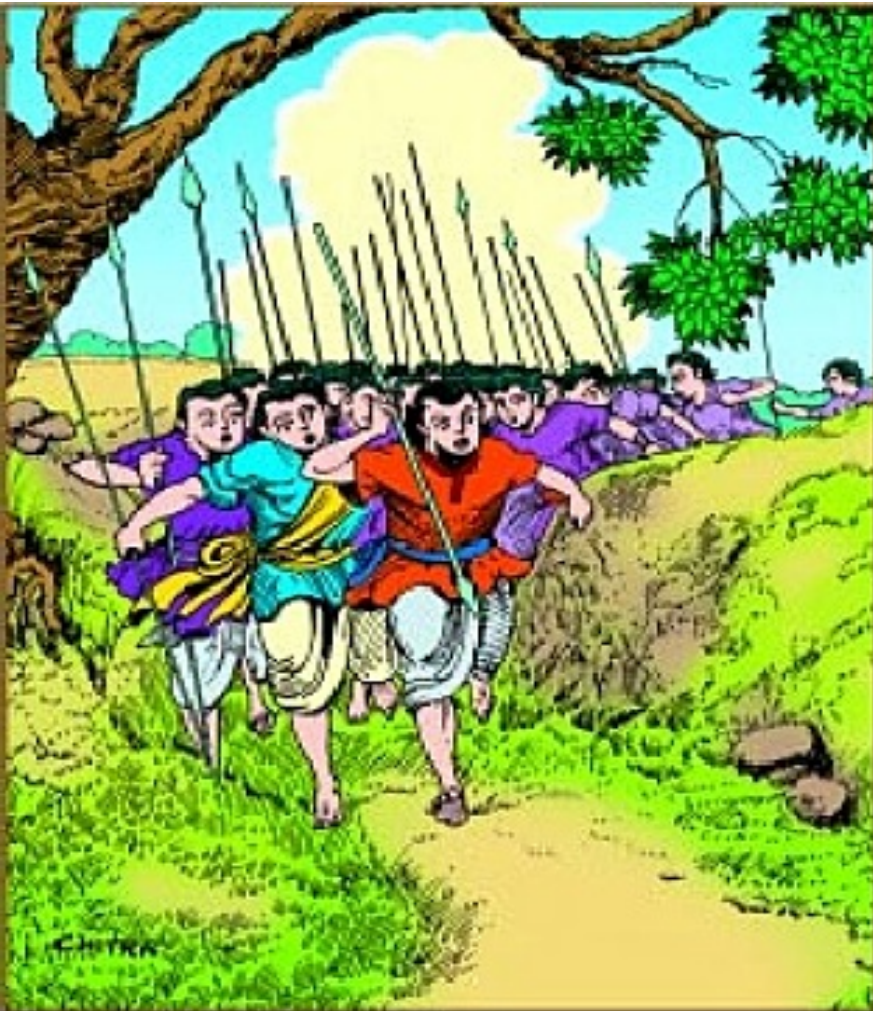
सेनापति ने उन्हें रोकते हुए कहा, ''मान्त्रिक को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचनी चाहिए। यह महाराजा की आज्ञा है। यह एक ऐसा रहस्य जानता है जिससे हमारा राज्य सम्पन्न हो सकेगा। लोग सोने और चाँदी से तोले जा सकेंगे।''

ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक लोगों का शोर, फटकारें सुनकर अपमान और भय से काँपने लगा।

ब्राह्मदण्डी तो इस आशा में था कि भयंकर घाटी में मिलनेवाली श्रीसम्पदा से राज्य जीत सकेगा। राजा बनने का सपना देख रहा था। अब वह अपनी इस दयनीय स्थिति पर आँसू बहा रहा था। भाग्य के उलट-फेर ने उसे भिखारी से भी बदतर जिन्दगी जीने पर मजबूर कर दिया था।

उसने चारों ओर से घेरे हुए, लोगों से, जो गालियाँ दे रहे थे, कहा, ''भाइयो, मुझे क्षमा करो। मैंने बहुत-सी गलतियाँ की हैं। मगर जिसने जंगल में तरह तरह के जानवरों का रूप धारण किया और लोगों को सताया और सेनापति को मारा, वह मेरा शिष्य गधा जयमल्ल है। हो सके तो उसको पकड़ो और उस गड़रिये केशव को भी।''

ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक की बातें सुनकर लोगों ने सैनिकों से जयमल्ल और केशव के बारे में पूछा। उन्होंने बताया कि वे दोनों कहीं पहाड़ों में छुप गये हैं। यह सुनते ही कुछ युवक, उन्हें पकड़ने के लिए लाठी भाले लेकर नगर के द्वार पार करके जंगल की ओर निकल पड़े।

केशव, उसका बूढ़ा पिता और जयमल्ल, छिपते और राजगुरु, सेनापति तथा सैनिकों की नजर से बचते हुए पहाड़ों में हाथियों की घाटी के पार के जंगल में निकल गये थे।

केशव को, जो पेड़ पौधों के पीछे से ब्रह्मापुर नगर की ओर देख रहा था, कुछ आदमी जंगल की पगडंडियों से आते हुए दिखाई दिये और उसने यह भी देखा कि ब्रह्मापुर के सैनिक जिन्होंने सारा जंगल उनके लिए छान डाला था, सिर नीचा करके नगर की ओर जा रहे हैं।

नगर से आते हुए लोगों के हाथों में लाठी और भाले देखकर केशव ने अनुमान कर लिया कि उस पर आपत्ति आनेवाली है। वह तुरंत पेड़ पर से उतरा और आनेवाली आपत्ति के बारे में अपने पिता और जयमल्ल से उसने कहा।

जयमल्ल और बूढ़े ने भी पेड़ पर चढ़कर देखा। उन्हें भी नगर से आते हुए युवक दिखाई दिये।

वे दोनों पेड़ पर से उतर आये। जयमल्ल ने

केशव से कहा, "सैनिकों की अपेक्षा ये लोग और खतरनाक हैं। वे सैकड़ों की संख्या में आ रहे हैं। सारे पहाड़ और जंगल को यदि घेरना चाहें तो घेर सकते हैं। अगर उन लोगों ने यह किया, तो जंगल के अन्दर के हिस्से में भी भागने के लिए हमारे पास अधिक समय नहीं है।"

केशव और बूढ़े को भी ऐसा ही लग रहा था। वे डर रहे थे कि अब क्या किया जाये। उन्हें कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। उन्होंने सोचा कि यदि वे ब्रह्मापुर के लोगों के हाथ आ गये, तो उन्हें तरह तरह के कष्ट भोगने होंगे।

ब्राह्मदण्डी भी जो सैनिकों द्वारा पकड़ लिया गया था, उनसे बदला लेने की कोशिश करेगा। ऐसी हालत में बच निकलना असम्भव लग रहा था। बूढ़े को यकायक एक उपाय सूझा। उसने केशव और जयमल्ल से इस प्रकार कहा:

"बेलों से, मेरे हाथ-पैर बाँधकर यहीं उस पत्थर पर छोड़ दो। तुम दोनों जंगल के अन्दर दूर चले जाओ। जो हमारे लिए आ रहे हैं, मैं तुमको उनके हाथ न पड़ने दूँगा।"

केशव इसके लिए न माना। जयमल्ल ने भी एतराज किया। राजगुरु ने क्योंकि बूढ़े को पहले देख रखा था, इसलिए वह यह कहकर कि उसने ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक के शिष्यों को भागने का मौका दिया है, वह उसे सज़ा दे सकता था। परन्तु बूढ़े ने हठ किया। उसने कहा, "सब के पकड़े जाने की अपेक्षा यह अच्छा है कि कम से कम दो तो बच निकलें।"

"मैं कहूँगा कि तुम दोनों मुझे बाँधकर यहाँ
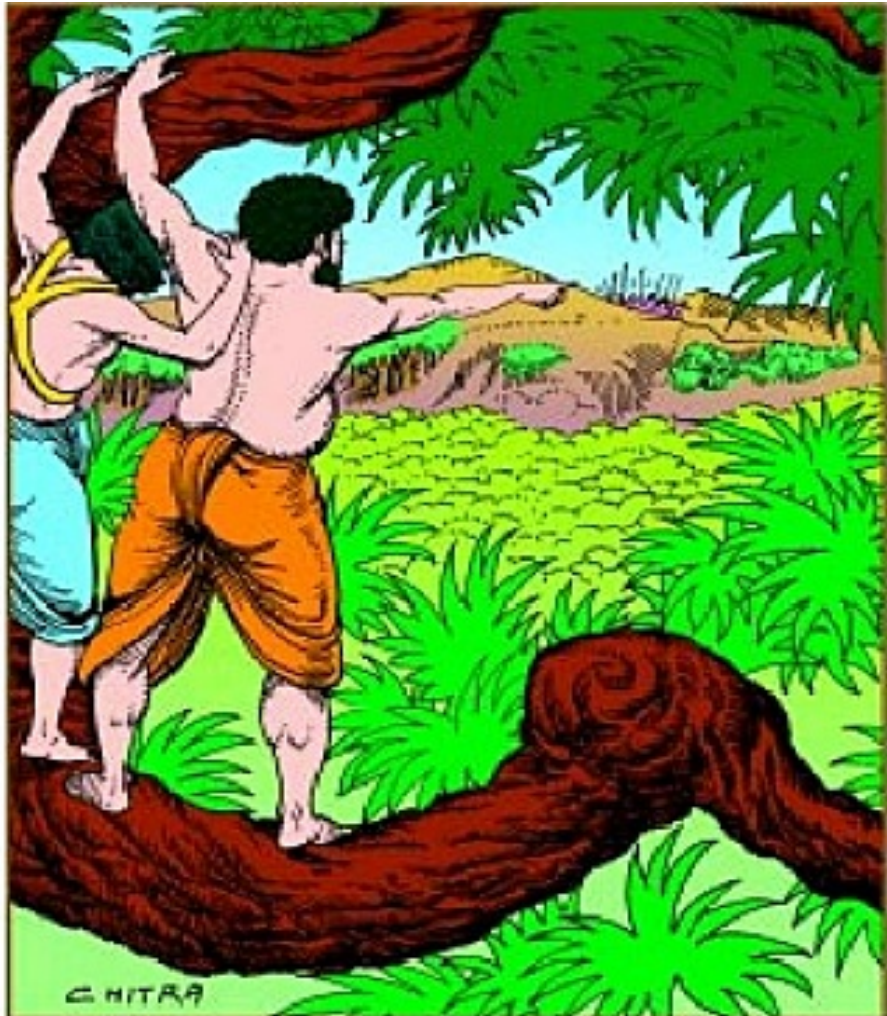
छोड़कर, भाग गये हो। मैं बूढ़ा हूँ। क्यों नहीं मेरी बातों का विश्वास करेंगे? जो भी हो, मैं किसी तरह उन्हें मना लूँगा और विश्वास दिला दूँगा कि तुम दोनों के साथ मैं नहीं हूँ और तुम्हें बचाने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। तुम दोनों जल्दी करो और यहाँ से खिसक जाओ। मैं सब संभाल लूँगा। जैसा मैं कहता हूँ, वैसा ही करो और मुझे बाँध कर यहाँ छोड़ जाओ।" केशव के पिता ने कहा।

जयमल्ल ने आखिर जंगली बेलों से बूढ़े को बाँध दिया और एक ऊँचे पत्थर पर उसे लिटा दिया।

केशव ने कहा कि जब वे लोग चले जायेंगे, तो वे तुरंत आकर फिर उसे ले जायेंगे। वे जंगल के अन्दर जल्दी जल्दी भागने लगे।

थोड़ी देर बाद ब्रह्मापुरी के वासियों का पहाड़ों

और जंगलों में से शोर मचाते हुए आना सुनाई दिया। वह भी जोर से चिल्लाया, ''बचाओ, बचाओ।''

यह सुनते ही ब्रह्मापुर के लोग लाठी लेकर भागे-भागे आये। बूढ़े को देखकर उन्हें अचरज हुआ। ''मुझे खोल दीजिये। मैं जानता हूँ कि आप लोग मान्त्रिक के शिष्यों के लिए पहाड़ और घाटी घाटी देख रहे हैं। उन्होंने ही मेरी यह हालत की है।'' बूढ़े ने कहा।

तुरंत चार पाँच युवक बूढ़े के बन्धन खोलने लगे। कई ने पूछा, ''वे किस तरफ़ गये हैं, जंगल में छुप गये हैं क्या? कहाँ भागे हैं?''

''वे बड़े चालाक हैं, बहुत चलते पुर्जे हैं। यह देख कि आप उन लोगों को जंगलों में खोज रहे हैं, वे भिखारी के वेश में ब्रह्मापुरी की ओर भाग गये हैं।'' बूढ़े ने कहा। ''वे जानते हैं कि नगर में भिखारियों पर कोई शक नहीं करेगा और सैनिक उन्हें नगर में खोजेंगे भी नहीं। इसलिए वे वहीं सुरक्षित रहेंगे।''

उन सबने अचरज में नाकों पर अंगुली रखी। उनमें से एक ने जो अपने को बड़ा अक्लमन्द समझता था, कहा, ''वे वहीं गये हैं, जहाँ हम उनको नहीं खोजेंगे। जो कोई गद्दार करार दिये जाते हैं, वे शहर छोड़कर जंगलों में भागते हैं। ये जंगल छोड़कर शहरों में भाग गये हैं। इसलिए ही वे हमारे सैनिकों को नहीं मिले। सचमुच में बड़े चलते पुर्जे मालूम होते हैं ये।'' ''अब जंगल में भटकना बेकार है। बूढ़ा ठीक कह रहा है। वे नगर में ही गये होंगे। वे वेश बदलने में उस्ताद हैं। इसलिए कुछ भी भेस बना सकते हैं। फिर भी, चलो, नगर के भिखारियों से पूछताछ करते हैं।'' दूसरे ने कहा।

इस तरह बूढ़े की बातों पर सब को विश्वास हो गया। तुरंत वे झुण्ड बनाकर चारों ओर भागने लगे। ''मान्त्रिक के शिष्य भिखारी के वेश में शहर की ओर भाग गये हैं, हो।'' वे चिल्लाने लगे। तुरन्त लोग नगर के सब भिखारियों को पकड़ने के लिए भागने लगे।

उन लोगों ने, जो ब्राह्मदण्डी के शिष्यों को पकड़कर लाने के लिए गये थे, शहर में आकर देखा कि ब्राह्मदण्डी हाथ बाँधकर राजा के सामने खड़ा खड़ा गिड़गिड़ा रहा है। प्रार्थना कर रहा है कि उसको प्राण भिक्षा दी जाये।

लोगों के झुण्ड में युवकों के साथ कुछ बालक

भी शामिल हो गये थे। उन सब के लिए ब्राह्मदण्डी एक तमाशा जैसा हो गया था। खास करके बच्चे इस घटना चक्र को देखकर बड़े प्रसन्न हो रहे थे। उन्हें अब ब्राह्मदण्डी के शिष्यों को देखने की उत्सुकता थी जिनके बारे में यह अफवाह फैल गई थी कि वे नगर में भिखारियों के वेश में घूम रहे हैं।

इधर राजा, राजगुरु, मंत्री और सेनापति मान्त्रिक से पूछताछ करके भयंकर घाटी के रहस्यों के बारे में जानने का प्रयत्न कर रहे थे। पर मान्त्रिक जिद कर रहा था कि जब तक उसके प्राणों की रक्षा का अभयदान न दिया गया, तब तक वह कुछ न बतायेगा।

''तुम अपनी जान के बारे में न डरो, राजा की तरफ़ से मैं तुम्हें अभय दान देता हूँ।'' कहते हुए राजगुरु ने राजा की ओर देखा। राजा ने स्वीकृति की सूचना देते हुए सिर हिलाया।

''क्या तुम्हारा यह कहना सत्य है कि भयंकर घाटी में अतुल धनराशि है। यदि यह सच है तो इसके लिए क्या प्रमाण हैं?'' राजगुरु ने मान्त्रिक से पूछा। ''आदरणीय राजगुरु, उपासकों के आराध्य, उन्मत्त भैरव को प्रत्यक्ष कहता मैंने इन कानों से सुना है। इससे अधिक और किसी प्रमाण की क्या आवश्यकता है?'' ब्राह्मदण्डी मान्त्रिक ने कहा।

''क्या इन बातों पर विश्वास किया जा सकता है?'' राजगुरु ने पूछा।

''भैरव, भैरव पाप नाश करो।'' मान्त्रिक ने दोनों कान बन्द करके कहा, ''बीस वर्षों तक उस भैरवेन्द्र के साक्षात्कार के लिए मैंने उपासना

की। आखिर मैंने उस भयंकर घाटी में जाने के लिए जिस व्यक्ति की जरूरत थी, उसे भी पकड़ा। उसमें वे सारे लक्षण थे, भयंकर घाटी में जाने के लिए जिनकी आवश्यकता होती है। मुझे शीघ्र ही सफलता मिलने की आशा थी। किन्तु मेरे दुष्ट शिष्य जयमल्ल ने इसी बीच सेनापति की हत्या कर दी और मेरी सारी आशाओं पर पानी फेर दिया। यदि आपको मेरी बातों में विश्वास नहीं है, तो कालभैरव ही मेरी शरण है।'' भक्ति के आवेश में वह आगे गिर गया।

''गुरुजी, यह दुष्ट ही सही पर बड़ा भक्त मालूम होता है।'' राजा ने आश्चर्य व्यक्त किया।

इतने में द्वार के पास शोर सुनाई देने लगा। सेनापति वहाँ गया। दो सैनिक उनके सामने हाँफ़ते हाँफ़ते आकर खड़े हुए। उनको देखते ही राजा ने इशारा करके कहा, ''आओ, अन्दर आओ, क्या बात है?''

''नगर के युवक भिखारियों को पकड़कर, ''क्या तुम मान्त्रिक के शिष्य हो, ''सच बताओ'' पीट-पीटकर यह पूछ रहे हैं। जब हम उन्हें बचाने गये तो उन्होंने हमें भी मारा।'' सैनिक ने कहा।

''क्या बात है?'' राजा ने सेनापति की ओर देखा।

''ब्राह्मदण्डी के दोनों शिष्य भिखारी का वेश बदलकर नगर में घूम रहे हैं, ऐसी एक अफवाह उड़ी है। इस अफवाह में कितनी सचाई है, हमें नहीं मालूम है।'' सेनापति ने कहा।

राजगुरु ने नीचे गिरे हुए मान्त्रिक को लात मारकर कहा, ''उठो, उठो, ब्राह्मदण्डी, सुनी तुमने यह अफवाह? क्या तुम भिखारी के वेश में अपने शिष्यों को पहचान सकोगे?''

ब्राह्मदण्डी यह सुनकर तुरंत खड़ा हुआ।

उसने कहा, ''सुनो प्रभु, मैं उन्हें भिखारी के ही वेश में नहीं, महाराजा के वेश में भी पहचान लूँगा।'' तब तक मन्त्री चुप बैठा था, पर यह सुनते ही उसने कहा, ''तो महाराज शहर के सब भिखारियों को क्या यहाँ पकड़कर लाऊँ?''

राजा ने स्वीकृति की सूचना सिर हिलाकर दी, मन्त्री और सेनापति कमरे से बाहर गये। उनकी आज्ञा होते ही सैनिक भिखारियों को पकड़ने के लिए नगर की सब गलियों में निकल पड़े।

(अभी है)
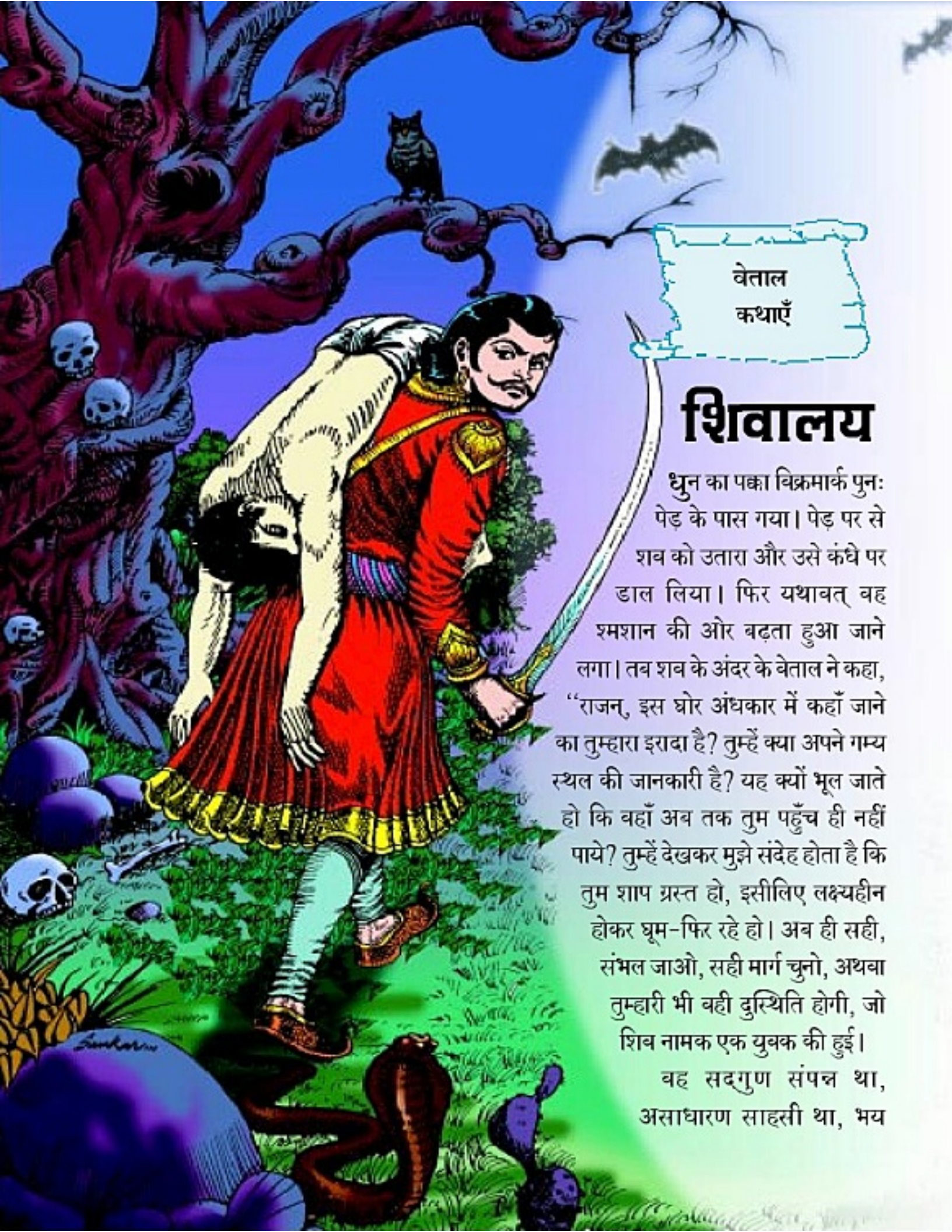
वेताल कथाएँ

शिवालय

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव को उतारा और उसे कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् वह श्मशान की ओर बढ़ता हुआ जाने लगा। तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, इस घोर अंधकार में कहाँ जाने का तुम्हारा इरादा है? तुम्हें क्या अपने गम्य स्थल की जानकारी है? यह क्यों भूल जाते हो कि वहाँ अब तक तुम पहुँच ही नहीं पाये? तुम्हें देखकर मुझे संदेह होता है कि तुम शाप ग्रस्त हो, इसीलिए लक्ष्यहीन होकर घूम-फिर रहे हो। अब ही सही, संभल जाओ, सही मार्ग चुनो, अथवा तुम्हारी भी वही दुस्थिति होगी, जो शिव नामक एक युवक की हुई।

वह सद्गुण संपन्न था, असाधारण साहसी था, भय
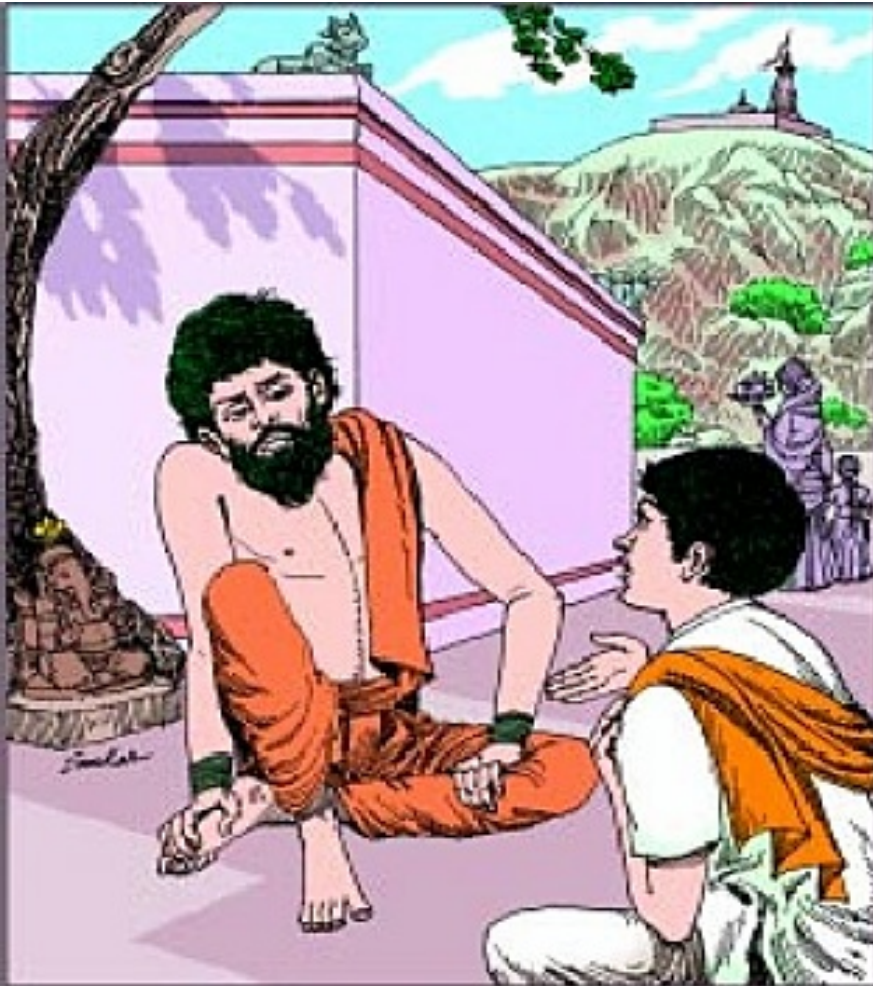
उससे भागता था। इन गुणों से लैस उसने एक महान कार्य भी किया। परंतु बुद्धिहीन होकर, अहंकार के नशे में चूर होकर उसने उसका फल खो दिया। जिस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तुम इतना अथक परिश्रम कर रहे हो, उसके फलस्वरूप अगर वह तुम्हारे हाथ आ जाए तो उसे कहीं जाने न दो, इसलिए मैं तुम्हें सावधान करने हेतु उस युवक शिव की कहानी सुनाने जा रहा हूँ। ध्यान से सुनना।'' फिर वेताल शिव की कहानी यों सुनाने लगा:

सुगंधिपुर नामक गाँव के निकट एक ऊँचे पर्वत पर एक सुविशाल मंदिर था। परंतु गाँववालों को यह ज्ञात नहीं कि उस मंदिर में प्रतिष्ठित भगवान कौन हैं। इसका एक कारण भी है। उस पर्वत के शिखर तक पहुँचने का कोई मार्ग नहीं था। वह प्रदेश विषैले सर्पों तथा कांटों की झाड़ियों से भरा पड़ा था।

उस गाँव में शिव नामक बीस साल की उम्र का एक युवक रहा करता था। जब से उसने होश संभाला, भक्तों की कहानियाँ सुना करता था। फिर इसके बाद, पढ़ने-लिखने में भी उसने पर्याप्त अभिरुचि दिखायी। वह अक्लमंद तो था ही, इससे भी बढ़कर वह असाधारण साहसी था। बचपन से ही पर्वत पर के मंदिर और उसमें प्रतिष्ठित भगवान को देखने की उसकी अदम्य इच्छा थी। एक दिन उसने अपनी माँ से अपने मन की इच्छा बतायी। वह एकदम घबराती हुई बोली, ''बेटे, यह दुस्साहस मत करना। हमारे गाँव के शिवालय के बैरागी ने भी वहाँ जाने का दुस्साहस किया। उसी प्रयत्न में उन्होंने अपनी एक आँख खो दी।''

दूसरे ही दिन शिव, बैरागी से मिला। उससे मंदिर जाने की अपनी इच्छा भी प्रकट की। तब बैरागी ने शिव की भुजा को थपथपाते हुए कहा, ''उस पर्वत शिखर पर पहुँचना कोई असाध्य कार्य नहीं है। मैं भी वहाँ तक जा पाया, किन्तु एक क्रोधी यक्ष के शाप के कारण एक आँख खो दी। परंतु वहाँ तक जाने का उपाय तुम्हें बता सकता हूँ। फिर तुम्हारा भाग्य तुम्हारा साथ देगा तो परिणाम अच्छा होगा।''

शिव ने माँ से यह बात छिपा रखी कि वह बैरागी से मिला। एक हफ्ते के बाद एक दिन सबेरे वह मंदिर जाने के लिए निकल पड़ा। महाशिव के प्रिय बेल के पत्तों को साथ लेकर वह निकला।

बैरागी के कहे अनुसार ही एक चट्टान पर महाशिव का रूप नक्काशा हुआ था। शिव के रूप को उसने प्रणाम किया और बेल के पत्तों को भगवान के चरणों पर थोड़ी देर तक रखने के बाद उन्हें अपने सिर पर रख लिया। इन पत्तों की महिमा के कारण न ही कांटे चुभते हैं और न ही विषैले सर्प पास आते हैं। यह रहस्य बैरागी ने बड़ी ही साधना के बाद जाना और शिव को बताया।

दुपहर तक शिव आधे पर्वत तक चढ़ गया। इतने में उसने पत्थर पर छेनी से शिल्प नक्काशने की आवाज़ सुनी। शिव ने उस ओर मुड़कर देखा कि कोई देवता पुरुष छेनी से शिवलिंग को नक्काश रहा है। वह मूल्यवान वस्त्राभूषणों से सुसज्जित था। परंतु बीच-बीच में उस पत्थर में दरारें पड रही थीं। शिव जान गया कि यह वही यक्ष है, जिसका जिक्र बैरागी ने किया था। वह धीरे-धीरे यक्ष के पास गया और विनयपूर्वक नमस्कार किया।

देवता पुरुष ने सिर उठाकर शिव को क्रोध-भरे नेत्रों से देखा और कहा, ''तुमने एक साधारण मानव होकर मेरे पास आने की हिम्मत कैसे की? जानते नहीं, मैं यक्ष देवता हूँ। तुम्हारी ही तरह एक बैरागी भी मेरे पास आया और मेरे हाथों शाप-ग्रस्त हुआ। तुम जैसे मानव यहाँ न पहुँचें, हमारी पूजाओं में खलल न डालें, इसीलिए हमने पर्वत मार्ग को दुर्गम कर दिया। फिर भी, तुम यहाँ कैसे पहुँच पाये? जानते नहीं, इसी वजह से उस बैरागी ने एक आँख खो दी।''

शिव ने निडर होकर कहा, ''यक्षोत्तम, जिस बैरागी को आपने शाप दिया, उन्होंने ही मुझे यह भी बताया कि यक्ष शिव का कितना अनादर कर रहे हैं, कितना बड़ा अपचार उनसे हो रहा है। बहुत पहले एक आदिवासी पर्वत पर शिकार करने आया था और लिंग के आकार के एक बड़े पत्थर को देखकर उसने उसे प्रणाम किया और फूलों से पूजाएँ कर शिव, महाशिव कहते हुए नतमस्तक होकर प्रार्थनाएँ करने लगा। आप यक्षों ने यह देखा और उससे कहा, ''अरे ओ मूर्ख, पत्थर की पूजा कर रहे हो और जप रहे हो शिव का नाम। यह बड़ा ही अपचार है।'' कहते हुए उन्होंने पत्थर को फोड़ डाला और उसे वहाँ से भगा दिया। शिव कुछ और कहने ही जा रहा था कि यक्ष ने उसे रोकते हुए कहा, ''जिन यक्षों के बारे में तुम बता

रहे हो, मैं भी उनमें से एक था। मेरा नाम यशोधन है। इससे भी अधिक मुख्य विषय एक और है। जिस आदिवासी को हमने यहाँ से भगाया, उसके दूसरे ही क्षण गंभीर स्वर में महाशिव ने कहा, ''तुम लोगों ने मेरे मासूम भक्त को सताया, यहाँ से भगाया और ऐसा करके बड़ा अपराध किया। यही नहीं, मेरे जिस रूप की वह पूजा कर रहा था, उसे फोड़ डाला। अतः तुम लोगों का यह धर्म बनता है कि पर्वत पर मेरे एक मंदिर का निर्माण करो और उस मंदिर के गर्भगृह में एक ऐसे शिव लिंग को प्रतिष्ठित करो जिसमें कोई लोप न हो। मेरे किसी निःस्वार्थ भक्त से ही यह संभव हो सकता है। तब तक तुम लोग इस पर्वत को छोड़कर अपना लोक नहीं जा सकते।''

शिव ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा, ''यक्षोत्तम, क्या ऐसे लिंग को बनाना कठिन काम है, जिसमें कोई लोप न हो?''

अपनी असहायता जताते हुए यक्ष ने कहा, ''हाँ, हमने देवालय का निर्माण तो कर दिया, पर लगता है, लोपहीन शिवलिंग को बनाना असाध्य कार्य है। देख रहे हो न, इस शिव लिंग के बीच में दरारें पड़ रही हैं।''

शिव थोड़ी देर तक भगवान शिव के उस शिव लिंग को देखता रहा, जिसे यक्ष तराश रहा था। फिर उसने हाथ जोड़कर भगवान शिव से कहा, ''हे महाशिव, भक्तिपूर्वक पूजा करनेवाले साधारण मानव हैं हम। हमारे गाँव के ही नहीं, बल्कि कितने ही भक्त आपकी पूजा करने, आपकी सेवा करने के लिए तड़प रहे हैं। किसी के हस्तक्षेप के बिना आप स्वयं मंदिर में प्रतिष्ठित हो जाइये।''

दूसरे ही क्षण दरारों से भरा वह शिवलिंग कांति से जगमगा उठा और देखते-देखते वह वहाँ से अदृश्य होकर गर्भगृह में प्रतिष्ठित हो गया।

शिव और यक्ष तुरंत मंदिर की ओर दौड़े। पर्वत पर जितने भी यक्ष थे, वहाँ आ पहुँचे और सबने मिलकर शिवलिंग का अभिषेक किया।

बाद यक्ष यशोधन ने अन्य यक्षों को शिव के बारे में बताया। फिर उसने शिव से कहा, ''महाशिव के प्रति तुम्हारी भक्ति अपार है। हम यक्षों का यहाँ रह जाना समुचित नहीं है, शास्त्र सम्मत भी नहीं है। तुम महाशिव की प्रीति के पात्र हो। अब से शिवालय की देखभाल की जिम्मेदारियाँ तुम्हें ही संभालनी होगी।''

शिव ने स्पष्ट शब्दों में कहा, "आप के इस आदर के लिए आपका मैं कृतज्ञ हूँ। आपने जिस मंदिर का निर्माण किया, उसमें प्रतिष्ठित भगवान शिव के दर्शन का भाग्य सब मानवों को प्राप्त हो। जिस बैरागी ने आपके शाप की वजह से एक आँख खोयी, उन्हें फिर से दृष्टि प्रदान कीजिये। परंतु मैं मंदिर की जिम्मेदारियाँ संभाल नहीं सकता। जाने की अनुमति दीजिये।'' कहता हुआ वह निकल पड़ा।

वेताल ने कहानी बता चुकने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा, "राजन्, यक्ष मंदिर में शिव लिंग को प्रतिष्ठित नहीं कर सके, पर वह काम शिव ने कर दिखाया। मंदिर की जिम्मेदारियों को संभालने के लिए उससे कहा गया, पर उसने उनकी इस इच्छा का तिरस्कार किया। मंदिर में शिवलिंग के प्रतिष्ठित होते ही क्या वह अपने को बहुत बड़ा मानने लगा? या उस अवसर पर उसकी बुद्धि शिथिल पड़ गयी? कहीं उसमें स्वार्थ ने घर तो नहीं कर लिया? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, "शिव बचपन से ही भक्तों की कहानियाँ सुनता था, शिक्षा में रुचि थी, इसी कारण वह पर्वत पर चढ़ पाया, जहाँ जाने में अन्य लोग डरते थे। वहाँ उसकी निस्वार्थ भक्ति के कारण ही शिवलिंग का प्रतिष्ठापन हुआ। उसकी आँखों के सामने ही घटी इस अद्भुत घटना से उसमें भक्ति भावना और बढ़ गयी। आध्यात्मिक विषयों को और गहराई से जानने की उसमें प्रबल इच्छा जगी। मंदिर की देखभाल की जिम्मेदारी से अधिक यह उसके लिए मुख्य बन गया। ऐसी भक्ति की प्रवृत्ति से पूर्ण मानवों में बुद्धि की शिथिलता या स्वार्थ होते ही नहीं। महाशिव को देखने की इच्छा एक महोन्नत तड़प है, आवेश है। मंदिर में शिव के दर्शन के बाद वहाँ से उसका चला जाना आध्यात्मिक शिखरों का अधिरोहण है। मानव कल्याण के साथ जुड़ा हुआ उत्तम प्रयास है।''

राजा के मौन भंग में सफल बेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

(आधार सुभद्रा देवी की रचना)

भारत दर्शक

वृक्ष–विवाह

साठ वर्षीय वट वृक्ष महाशय ने एक शुभ समारोह में पारम्परिक तरीके से २५ वर्षीया कुमारी नीम से विवाह किया। ये वृक्ष केरल के केन्द्रीय भाग में, तेनकुरीसी में, शिव मन्दिर के परिसर में स्थित हैं। पुजारी ने वट वृक्ष पर मन्दिर का पावन जल छिड़का और उसे हल्के सफेद रंग की नई धोती पहनाई जैसा कि आम तौर पर केरल में दूल्हे को पहनाई जाती है। नीम को लाल रेशम की साड़ी में सजाया गया।

मुहूर्त्त का क्षण जैसे ही आया, पुजारी ने अर्पित स्वर्ण थाली ली और नीम के चारों ओर इसे बाँध दिया। इस अवसर पर उपस्थित भक्तों द्वारा वेद मंत्रों के उच्चारण से वायुमंडल गूंज उठा।

सिर रहित प्रतिमाएँ

तमिलनाडु के वेल्लौर जिले में गाँवों में जानेवाले पर्यटकों को अम्मन (देवी) मन्दिरों के सामने सिर रहित प्रतिमाओं को देखकर आश्चर्य होगा। सामान्य रूप से पर्वोत्सवों के अवसर पर इनके सिरों को पुनर्स्थापित कर दिया जाता है। विश्वास किया जाता है कि यदि प्रतिमाओं को पर्वों के अतिरिक्त अन्य समय पर सिर के साथ रखा जाये तो गाँव में ''अग्निकाण्ड अथवा बाढ़'' का भय हो सकता है। प्रतिमा अरवान की मानी जाती है जो एक विश्वास के अनुसार अर्जुन का पुत्र था, जिसने अपने जीवन का बलिदान देकर पाण्डवों को महाभारत युद्ध में जीतने में मदद की थी। इसीलिए उसकी प्रतिमा सिर रहित रखी जाती है।

हिमाचल प्रदेश की एक लोक कथा

दो भाई

यदि हमें यह बताया जाये कि ज्ञानचन्द नाम का कोई राजा था, तब हम यही समझेंगे कि वह ज्ञानी और बुद्धिमान होगा। लेकिन छत्रपुर के राजा में ऐसे कुछ भी गुण नहीं थे। वास्तव में, वह नहीं चाहता था कि उसकी प्रजा फसल उगाये या कूएँ खोदे या सड़कें बनाये। यहाँ तक कि लोगों के खाने के लिए अनाज की कमी हो गई, पानी का अभाव हो गया और वे लोग जिधर जाना चाहें उधर जाने में असमर्थ हो गये। उन्हें पहाड़ों पर चढ़कर और पत्थरों पर व कीचड़ में चलकर जाना पड़ता था। फिर भी राजा ज्ञानचन्द घरों, दुकानों और खेतों पर कर लगाने से बाज नहीं आता था। प्रजा राजा से नफरत करती थी, लेकिन वे लाचार थे।

''डर है, हम लोगों का आगे क्या होगा?'' एक दिन शाम के समय बरगद के नीचे बैठे कुछ लोगों से एक ग्रामीण ने कहा।

''रोने-धोने से कोई लाभ नहीं होगा।'' भीड़ के सभी सिर ऊपर उठ गये यह देखने के लिए कि कौन बोला। यह कुंजीलाल था जिसने कभी ज्ञानचन्द के पिता राजा अतुल्यचन्द के लिए युद्ध किया था। उन्हें सन्देह हुआ कि क्या एक भूतपूर्व सैनिक उनकी समस्याओं का समाधान कर सकेगा! वे स्तब्ध रह गये।

''हमें इसके लिए कुछ करना चाहिये'', कुंजीलाल ने सावधानी से शब्दों का चुनाव करते हुए कहा। यह भूतपूर्व सैनिक अभी भी पहाड़ी शेर के समान मजबूत और हट्टा-कट्टा था। साथ ही, वह मधुर और शिष्ट स्वभाव का था। लोग उसे पसन्द करते थे। सबने एक आशा भरी नजर से उसके चेहरे की ओर देखा।

''सबसे पहले हमें कर देने से इनकार कर देना चाहिये। जब महसूलदार कर वसूलने के लिए आये तब उसे खाली हाथ वापस भेज देना चाहिये।
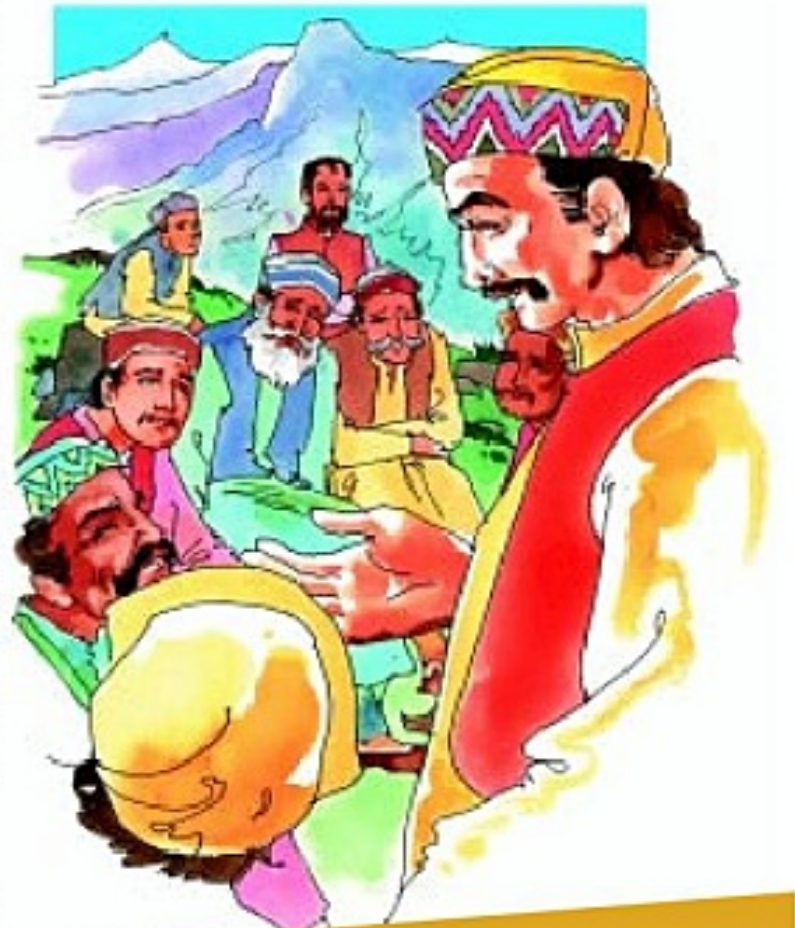
देखते हैं, राजा क्या करता है?''

''ठीक है, ठीक है'', भीड़ ने एक साथ कहा। जो अब तक डर रहे थे, उनमें अब शक्ति आ गई थी। ''यदि वह जाने से मना करेगा तब हम उसे पीटेंगे।''

राजा को इनके निश्चय के बारे में पता चल गया था, इसलिए उसने महसूलदार को उस गाँव में नहीं भेजा। उसके बदले उसने गाँव से लड़ने के लिए अपने सैनिकों का नेतृत्व स्वयं करने का निश्चय किया।

गाँववालों ने कुंजीलाल को खबर दी कि सैनिक गाँव के छोर तक आ चुके हैं और वे राजा के आने का इन्तजार कर रहे हैं। लेकिन कुंजीलाल घबराया नहीं। उसने सोचा और अपने को आश्वासन दिया, 'क्यों न अपने भाई कीर्तिलाल को साथ ले लें। दोनों मिलकर राजा को हरा देंगे।' लेकिन कीर्तिलाल स्वभाव से डरपोक था। उसने कहा, ''खेद है भाई, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। मेरे डॉक्टर ने मुझे पूरी तरह विश्राम की सलाह दी है।''

कुंजीलाल को न आश्चर्य हुआ, न निराशा ही। उसने गाँव के सभी युवकों को इकट्ठा किया और राजा के सिपाहियों के साथ युद्ध किया। सौभाग्य से, गाँववाले संख्या में सिपाहियों से अधिक थे। उन सबने बहादुरी से युद्ध किया और राजा को परास्त कर दिया।

जब गाँव की विजयी सेना लौटकर आई तब कीर्तिलाल ने सबसे पहले उनका स्वागत किया। ''कुंजीलाल, मैं वास्तव में तुम्हारे साथ आना चाहता था, लेकिन डॉक्टर की सलाह मानना आवश्यक था। फिर भी, लूट के माल में से जो भी लाये हो, मेरा हिस्सा मुझे दे सकते हो। आखिर, मैं तुम्हारा प्यारा भाई जो हूँ।''

कुंजीलाल अपने भाई के साथ झगड़ा करना नहीं चाहता था, इसलिए लूट के माल में से एक हिस्सा उसे देकर भेज दिया।

कुंजीलाल ने शीघ्र ही महसूस किया कि राजा ज्ञानचन्द उसे अधिक दिनों तक चैन से बैठने नहीं देगा और उसे दण्ड देने के लिए मौके की ताक में रहेगा। उसे अपनी पत्नी की चिन्ता थी, जो एक बच्चे को जन्म देनेवाली थी। उसने उसे

एक दिन कहा, "गंगा, मुझे डर है कि मुझे दण्ड देने के लिए राजा तुम्हें परेशान कर सकता है। इसलिए मैं तुम्हें एक पहाड़ी गुफा में सुरक्षित रख दूँगा।"

उसकी स्नेहिल पत्नी उसे अकेले छोड़कर जाना नहीं चाहती थी। उसने अपने पति को सलाह दी, "मेरे स्वामी, क्यों नहीं राजा से माफी माँग लेते? मुझे विश्वास है कि वे आपको क्षमा कर देंगे और सब कुछ भूल जायेंगे।"

"नहीं गंगा, ऐसा कभी नहीं होगा", कुंजीलाल ने कहा। "हमारा राजा वैसा नहीं है। मैं अन्त तक संघर्ष करूँगा, जब तक वह अपने तौर-तरीके नहीं बदल लेता।"

गंगा ने सोचा कि पति के साथ बहस करना बेकार है, इसलिए उसने काफी दिनों के लिए अनाज रख लिया और पहाड़ की गुफा में रहने के लिए पति के साथ चली गई।

कुंजीलाल ने उसके लिए गुफा में आराम से ठहरने का प्रबन्ध कर दिया। आते समय उसने अपनी पत्नी से कहा, "गंगा, हमलोगों का बेटा भी एक बड़ा योद्धा होगा और बड़ा होने पर हमारे शत्रुओं के साथ युद्ध करेगा। डरना नहीं, मैं शीघ्र ही लौट आऊँगा।" भारी मन से उसने अपनी पत्नी से विदा ली।

कुछ दिनों के बाद राजा के एक सन्देश-वाहक ने कुंजीलाल को बताया कि राजा ने राज्य के एक दूसरे भाग में हुए विद्रोह को दबाने के लिए उससे मदद माँगी है। सन्देश में यह भी था कि "यदि तुम सफल हो गये तो तुम और तुम्हारे ग्रामवासी हमेशा के लिए शान्तिपूर्वक रह सकते हैं और कभी कर देना नहीं पड़ेगा।"

यद्यपि उसे राजा की बात पर भरोसा नहीं था, फिर भी अपने गाँव के लिए उसने जाने का निश्चय कर लिया। सहायता के लिए वह फिर एक बार अपने भाई के पास गया। कीर्तिलाल पहले उसके साथ जाने के लिए राजी हो गया। लेकिन अचानक उसने बीमारी का बहाना बनाते हुए कहा, "लगता है मैं तुम्हारे काम नहीं आ सकूँगा और केवल भार बन जाऊँगा।"

"मुझे भय था कि गाँववाले तुम्हें हानि पहुँचायेंगे। इसलिए तुम्हारी मदद के लिए रुक गया।" कीर्तिलाल ने कहा। कुंजीलाल ने वास्तविक कारण जानते हुए भी उसे धन्यवाद दिया और कहा, "आ जाओ, मैं इनाम लेने के लिए राजा के पास जा रहा हूँ।"

राजा ने खबर सुनकर कोई उत्साह नहीं दिखाया। उसने सिर्फ यह कहा, "तुमलोग कुछ दिनों के लिए यहाँ रहो और दरबार में शामिल हो जाओ। मेरे दरबार में योद्धा नहीं हैं।"

राजा को पता चला कि दोनों भाइयों में सच्चा प्रेम नहीं है । उसने कीर्तिलाल को एक गुप्त सन्देश भेजा कि यदि तुम मेरा काम कर दो तो तुम्हारे साथ अपनी बेटी का विवाह कर दूँगा।

कीर्तिलाल के लिए यह काम आसान था, क्योंकि दोनों भाई एक ही कमरे में सोते थे। इस घोर अपराध को अंजाम देने के बाद वह राजा से अपना इनाम माँगने गया। किन्तु राजा का उत्तर सुनकर उसे बहुत धक्का लगा। "तुम्हें कौन अपनी बेटी का हाथ देगा जिसके दिल में अपने भाई के लिए तिल मात्र भी प्यार नहीं है। तुम्हें अपने अपराध के लिए सजा मिलेगी, हालांकि तुमने मेरे कहने पर ही यह काम किया है।"

गाँववाले, कुंजीलाल की मौत की खबर सुनकर स्तब्ध रह गये।

उधर पहाड़ की गुफा में गंगादेवी अपने पति

कुंजीलाल अकेला ही विद्रोहियों का सामना करने के लिए चल पड़ा। उस गाँव के बड़े-बूढ़ों ने सुन रखा था कि कुंजीलाल कैसे अपने गाँव का चहेता बन गया। सीमा पर उन सबने उसका स्वागत किया। कुंजीलाल ने उन्हें विश्वास दिलाया कि यदि वे विद्रोह नहीं करें तो राजा अब न्यायपूर्वक राज्य करेगा। गाँववालों ने उसकी बात मानकर आन्दोलन बन्द कर दिया।

कुंजीलाल इस बात से प्रसन्न था कि बिना बल-प्रयोग अथवा रक्तपात के विद्रोह को उसने शान्त कर दिया। वह राजा को यह समाचार देने के लिए महल की ओर चल पड़ा। मार्ग में उसे कीर्तिलाल मिल गया। "क्यों, तुम घर वापस क्यों नहीं गये?" कुंजीलाल ने पूछा।

का महीनों और बर्षों तक इन्तजार करती रही। उसे आश्चर्य हुआ कि उसने अब तक कोई समाचार क्यों नहीं भेजा। गाँववालों को मालूम नहीं था कि कुंजीलाल ने अपनी पत्नी को कहीं रख दिया है। उन्हें यह भी मालूम नहीं था कि उसने एक बेटे को जन्म दिया है।

गंगादेवी ने बच्चे को पाल पोस कर बड़ा किया और उसका नाम बज्रलाल रखा। बहुत दिनों तक माँ-बेटे को नहीं मालूम था कि पास की गुफा में एक मुनि तपस्या कर रहा है। उसने अनेक सिद्धियाँ प्राप्त कर ली थीं। उसे गुफा के आसपास एक बालक को खेलते हुए देखकर आश्चर्य हुआ। लड़का मुनि को अपनी माँ के पास ले गया। माँ ने मुनि को अपने पति के बारे में बताया।

मुनि ने अपनी योग शक्ति से जान लिया कि कुंजीलाल के साथ क्या घटित हुआ। उसने गंगादेवी को आश्वासन दिया कि उसके बच्चे को स्वयं शिक्षा प्रदान करेगा और पिता का बदला लेने के लिए उसे तैयार करेगा।

लेकिन गंगादेवी ने निश्चय किया कि वह अपने बेटे को किसी खतरे में नहीं डालेगी। पर मुनि ने उसे एक ऐसा कोट दिया जिसके पहनने पर उसे कोई देख नहीं सकता था। वह आसानी से महल में प्रवेश कर गया।

राजा को पता नहीं चला कि कहाँ से आवाज आई। उसे सुनाई पड़ा, ''ज्ञानचन्द, तुम्हारी मुक्ति का दिन आ गया। तुमने मेरे पिता को अपने ही भाई के द्वारा मरवा दिया। इसलिए तुम्हारा अपराध भाड़े के सिपाही से भी सौ गुना बड़ा है।''

''तुम कौन हो? कहाँ से बोल रहे हो?'' राजा ज्ञानचन्द ने काँपती हुई आवाज में पूछा।

''तुम्हें यह जानने की जरूरत नहीं है'', आवाज ने कहा। दूसरे ही क्षण राजा निष्प्राण हो लुढ़क गया।

बज्रलाल तब अपनी माँ के पास लौट गया। मुनि के आदेश से वे अपने गाँव लौट आये। मुनि ने गाँववालों को सम्बोधित किया। वज्रलाल का अपने नये नेता के रूप में सब ने स्वागत किया।

समाचार झलक

ब्रिटेन में भारतीय पर्वोत्सव

ब्रिटिश हाउस ऑफ कॉमन्स में दिवाली मनाने और लन्दन के हिन्दुओं द्वारा गणेश प्रतिमा का तेम्स नदी में विसर्जन करने की खबर जब मिली तो हिन्दू लोग गर्व से फूले न समाये। प्रतिमा पुणे से मँगाई गई थी और तीन दिनों तक पूजन के पश्चात इसे जीवन के सभी क्षेत्रों के लगभग दस हजार दर्शकों की उपस्थिति में विसर्जित कर दी गई। गणेश चतुर्थी पर्वोत्सव का आयोजन यू.के. की हिन्दू कल्चर ऐण्ड हेरिटेज सोसाइटी द्वारा किया गया था। हाउस ऑफ कामन्स के विशाल भोजन कक्ष में राम, सीता तथा लक्ष्मण की प्रतिमाएँ रखी गई थीं। भारी संख्या में मंत्री, सांसद, लॉर्ड्स तथा महिला बैरन्स उत्सव में शामिल थे।

प्रधानमंत्री टॉनी ब्लेयर ने इस अवसर पर एक विशेष सन्देश में कहा, ''पर्वोत्सव हममें से प्रत्येक को ब्रिटेन की सफलता में भारतीय समुदाय के महत्वपूर्ण योगदान पर विचार करने का अवसर प्रदान करता है।''

एक अनोखा खगोलीय चमत्कार

यदि तुमने यह अवसर खो दिया है तो अब विगत अक्तूबर को घटित उस खगोलीय अद्‌भुत त्रिक दृश्य प्रपंच को देखने के लिए तुम्हें ६,००० बर्ष तक प्रतीक्षा करनी होगी। दो ग्रहणों के अतिरिक्त पृथ्वी और मंगल का सान्निध्य–और यह सब एक महीने के भीतर। खगोल शास्त्रियों के अनुसार एक ही स्थान से ऐसे अद्‌भुत चमत्कार को हजारों वर्षों तक कोई देख नहीं पायेगा। एक सूर्यग्रहण ३ अक्तूबर को घटित हुआ और एक चन्द्रग्रहण १७ अक्तूबर को, जबकि मंगल ३० अक्तूबर को पृथ्वी से ६९.४५ मिलियन कि.मी. निकट आ गया।

चन्दामामा प्रश्नावली-५

Co-sponsored by
Infosys FOUNDATION,
Bangalore

जो सही उत्तर देंगे, उनमें से एक को २५० रुपये दिये जायेंगे।*

*सही उत्तर देनेवाले एक से अगर अधिक हों तो पुरस्कार की रक़म ड्रा द्वारा निकाले गये सही उत्तर देनेवाले पाँच लोगों में समान रूप से बाँटी जायेगी।

इस प्रश्नावली में जो भी प्रश्न पूछे गये हैं, वे सबके सब जनवरी व दिसंबर २००५ के बीच में चन्दामामा के अंकों में प्रकाशित कहानियों व शीर्षकों में से लिये गये हैं, जिन्हें आप पढ़ चुके हैं। वे यदि याद हों तो इन सबके उत्तर आप तुरंत बता सकेंगे। यदि याद नहीं हों तो बारहों अंकों को सामने रख लें और पन्ने पलटें तो उन्हें आसानी से जान जायेंगे। अवश्य ही बड़ा मज़ा आयेगा।

आपको यह करना है: १. उत्तर लिखिये, २. अपना नाम और उम्र (१६ वर्ष की उम्र के अंदर होना आवश्यक है); पिनकोड सहित सही पता हो, ३. अभिदाता हों तो वह संख्या लिखिये, ४. लिफ़ाफे पर **चन्दामामा प्रश्नावली-५** लिखें और उसे चन्दामामा के पूरे पते पर हमें भेजिये, ५. जून महीने के अंत तक आपकी प्रविष्टि हमें मिल जानी चाहिये, ६. अगस्त महीने के अंक में परिणाम प्रकाशित किये जायेंगे।

१. उस शास्त्र का क्या नाम है, जिसमें लिखावट के आधार पर उस व्यक्ति का व्यक्तित्व बताया जाता है?

२. आग की लपटों से एक गिरगिट को बचाने के कारण रोगों की चिकित्सा करनेवाले फलों के रखवाले ने सेब के पौधे को भेंट के रूप में एक युवक को दिया। वह युवक कौन है? किस देश की प्राचीन गाथा में वह युवक है?

३. कुल तीर्थंकर कितने हैं?

४. जिन पेन्सिलों को हम अब उपयोग में लाते हैं, उन्हें किसने और कब तैयार किया?

५. समुद्र के जल को बड़े-बड़े बरतनों में वाष्प बनाकर किसने पहले पहल नमक बनाया?

६. हर छोटी-सी बात के लिए दूसरों की सलाहों पर हम निर्भर रहेंगे तो, हम आफ़तों में तो फंस जायेंगे, साथ ही दूसरों को भी कष्टों में फंसाएँगे। किस कहानी में इस सच्चाई पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला गया है?

७. यह चित्र किस कहानी का है?
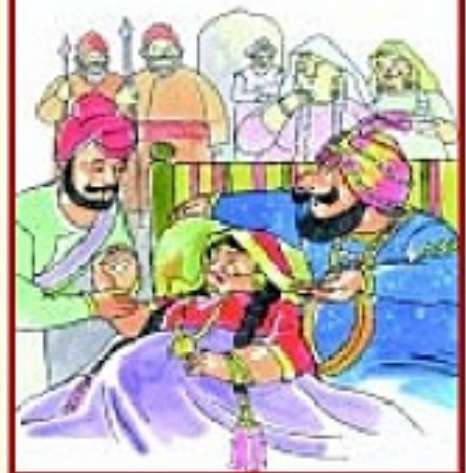
चूड़ीवाला मणिकंठ

रामापुर का मणिकंठ चूड़ियाँ बेचकर अपना पेट भरता था। सबेरे ही वह तैयार हो जाता था और चूड़ियों की थैली को कंधे पर लटकाकर निकल पड़ता था। दो-तीन गाँवों में उन्हें वह बेचता था और शाम को घर लौट आता था।

मणिकंठ अच्छी व टिकाऊ चूड़ियाँ बेचता था और वह भी, सही दाम पर, इसलिए ज़्यादातर लोग उसी के पास चूड़ियाँ खरीदते थे।

मणिकंठ हर रोज़ जब सबेरे-सबेरे निकलता था तब अवश्य ही ग्राम देवी की पूजा करता था। उसी प्रकार शाम को भी जब लौटता था, अवश्य ही देवी की पूजा करने के बाद ही घर लौटता था।

हर रोज़ की ही तरह उसने चूड़ियाँ बेचीं और घर लौटा। फिर भोजन करने के बाद लेट गया। आधी रात को किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। चूँकि वह गहरी नींद में था, उसने वह ध्वनि नहीं सुनी। फिर भी खटखटाने की ध्वनि चालू रही। थोड़ी देर बाद वह उठा। दरवाज़ा खोलकर उसने बाहर झाँका तो वहाँ कोई नहीं था। हवा में दोनों हाथ हिल रहे थे। फिर आवाज़ आयी, "मणिकंठ, मुझे चूड़ियाँ

पहनाओगे?'' वह एक स्त्री का कंठस्वर था। मणिकंठ अंदर से चूड़ियाँ ले आया और उन दोनों हाथों में पहनायीं। फ़ौरन वे दोनों हाथ ग़ायब हो गये।

दूसरे दिन भी दरवाज़ा खटखटाया गया तो मणिकंठ ने दरवाज़ा खोला। उसी कंठस्वर ने कहा, ''मणिकंठ, मेरी चूड़ियाँ अच्छी लगती हैं न?'' चूड़ियों के हाथों को हिलाते हुए उसने पूछा। ''ये चूड़ियाँ तेरे हाथों में बहुत अच्छी लगती हैं'' कहता हुआ वह फिर से लेट गया। तीसरे दिन आधी रात को उसी कंठस्वर वाली स्त्री ने उसे नींद से जगाया। आँखों को मलते हुए वह उठा और कहा, ''देवी, आप दीखती नहीं हैं। आख़िर आप कौन हैं? क्यों मुझे हर रोज़ नींद से जगाती हैं और सताती हैं?''

''मणिकंठ, मैं कौन हूँ, इसकी चिंता मत करना। तुम मुझे चूड़ियाँ पहनाते हो, इसके लिए मैं तुम्हें कोई प्रतिफल देना चाहती हूँ। माँगो, तुम्हें क्या चाहिये?'' उस स्त्री कंठस्वर ने पूछा।

''मैं क्या माँगू देवी! बस, गाँवों में घूम सकूँ, अपना व्यापार कर सकूँ, इतनी शक्ति मात्र मुझे देना। परिश्रम करके अपना परिवार चला रहा हूँ। पत्नी और संतान को खिला रहा हूँ। मेरी पत्नी सुगुणवती है, मेरे बच्चे मेरी बात को नहीं टालते। बस, वे खुश रहें, उन्हें कोई कष्ट न हो, यही मेरे लिए सब कुछ है।'' मणिकंठ ने कहा।

''मणिकंठ, तुम्हारी अच्छाई ही तुम्हारी रक्षा करेगी। परिवार सहित तुम सुखी रहो, कुशल रहो'' कहती हुई ग्राम देवी अपनी एक झलक मात्र दर्शाती हुई अदृश्य हो गयी। ***-ए.सि.रूपिणी,***
विनायक नगर गली, शाहपुर

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-३ (अप्रैल २००६)

हमारे हिन्दी संस्करण के पाठकों की ओर से भेजी गई प्रविष्टियों में कोई भी पूर्ण रूप से सही नहीं पाई गई। इसलिए हिन्दी में हमलोग पुरस्कार नहीं दे रहे हैं। अपने पाठकों के लाभार्थ हम प्रश्नोत्तरी-३ के उत्तर नीचे प्रकाशित कर रहे हैं। कृपया चन्दामामा की आगामी प्रश्नोत्तरी में भाग लेते रहिये।

चन्दामामा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता-३ के उत्तर :

१. गड्डैया।
२. कुतुबुद्दीन ऐबक।
३. मूर्ख राजा।
४. महाशासन।
५. दिगंबर, श्वेतांबर।
६. अंजुमन (अग्नि मन्दिर)।
७. स्वरूप श्रीवास्तव।
८. मिला राजकुमार को पुनर्जीवन।

सुस्त

सोमशर्मा धनी परिवार का था। जब से उसने विद्याभ्यास शुरू किया, तब से वह काव्यों का पठन करता था और दूसरों को उनकी कहानियाँ बताता रहता था। कहानियों को बताने की उसकी पद्धति बड़ी ही निराली थी, इसलिए उसके मित्रों ने उसे महाकवि की उपाधि प्रदान की। वे उससे कहा करते थे, ''तुम भी कोई महाकाव्य रचो, महाकवि की उपाधि को सार्थक करो।''

''पांडवों के अज्ञातवास की कहानी मुझे बेहद पसंद है। उस कहानी को काव्य के रूप में रचूँगा। वह भी, शिक्षा की पूर्ति के बाद,'' सोमशर्मा ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा।

थोड़े ही समय में सोमशर्मा की शिक्षा पूरी हुई। मित्रों ने उसे काव्य रचने के लिए प्रोत्साहन दिया। उसने उनसे कहा, ''तालपत्रों पर रचित कहानी को पढ़ने से मुझमें उत्साह पैदा होता है। परंतु स्वयं लेखनी हाथ में लेकर अक्षर लिखना मुझसे नहीं हो पाता। मुझपर सुस्ती हावी हो जाती है। इसलिए अच्छा यही होगा कि मैं कविता सुनाते जाऊँगा और तुममें से कोई उसे लिख लेना।''

सोमशर्मा के दो मित्र यह काम करने को आगे आये। सोमशर्मा ने उनसे कहा, ''मन में उत्साह हो, तभी मैं कविता बता पाता हूँ। जब चाहो, तब कविता बताना मेरे बस की बात नहीं है। इसलिए तुम दोनों मेरे घर आ जाना, हमेशा मेरे ही साथ रहना और जब मैं कुछ कहूँ, उसे लिख लेना।''

''यह हमसे नहीं हो सकता। सुस्ती तजो और खुद लिखने का अभ्यास करो। नहीं तो, यथाशीघ्र विवाह कर लो। चूँकि तुम्हारी पत्नी सदा तुम्हारे ही संग रहेगी, वह तुम्हारी बतायी कविता लिपिबद्ध करती रहेगी।''

कुछ समय बाद सोमशर्मा का विवाह सुचला नामक युवती से संपन्न हुआ। उसके मित्र सुचला से मिले और कहा, ''तुम्हारा पति महाकवि है।

कमला जोशी

उससे काव्य रचाना तुम्हारी जिम्मेदारी है।''

सुचला ने यह जिम्मेदारी स्वीकार कर ली। परंतु दिन भर वह घरेलू कामों में लगी रहती थी। अंधेरा हो जाने के बाद सोमशर्मा सो जाना पसंद करता था और कविता पर उसकी दृष्टि होती नहीं थी। फिर भी कभी-कभार वह एक दो कविताएँ बता देता था और यों एक साल के अंदर वह केवल बीस कविताएँ बता पाया।

मित्रों ने उन कविताओं को सुनकर कहा, ''तुम्हारी कविता श्रेष्ठ है। सुस्ती को त्याग कर काव्य को पूरा करो।''

उनकी प्रशंसाओं ने सोमशर्मा का उत्साह बढ़ाया और उसने यथाशीघ्र काव्य रचने का निश्चय किया। परंतु उसी दिन सुचला को मायका ले जाने उसके सास-ससुर आये। सोमशर्मा ने सुचला से कहा, ''जब तक तुम नहीं लौटोगी, तब तक मेरे काव्य को लिपिबद्ध कौन करेगा?''

इसपर सुचला ने हँसते हुए कहा, ''लौटने के बाद भी मैं समय नहीं दे सकती, क्योंकि नवजात शिशु की देखभाल करनी होगी। इसलिए सुस्ती छोड़ अपना काव्य स्वयं लिखिये।''

सुचला थोड़े ही दिनों में माँ बनकर लौटी। परंतु सोमशर्मा बीस कविताओं तक ही सीमित रहा। इसपर उसे दुख हुआ, पर पति की कविता लिखने के लिए समय नहीं दे पायी।

जब मित्रों को यह बात मालूम हुई, तब उन्होंने सोमशर्मा से कहा, ''हर किसी में कविता बताने की शक्ति व योग्यता नहीं होती। हमारी बात मानो,

सुस्ती छोड़ो और काव्य को पूरा करो।''

''तुम लोग मेरे निकट दोस्त हो। तुम्हारे कहने मात्र से मैं बड़ा कवि बन नहीं जाता। कोई महान कवि जब तक नहीं कहता, तब तक मुझमें उत्साह पैदा नहीं होगा।'' सोमशर्मा ने कहा।

तब उसके दोस्तों ने, राजा से सम्मानित सारस्वत नामक कवि को निमंत्रित किया और उसे सोमशर्मा के घर ले आये। उन्होंने सोमशर्मा की कविताओं को पढ़ने के बाद कहा, ''सरस्वती तुमपर प्रसन्न हैं। जल्दी ही काव्य पूरा करवाऊँगा और राज सम्मान दिलाऊँगा, यह मेरी जिम्मेदारी है।'' यों कहकर वह चला गया।

सोमशर्मा ने मित्रों से कहा, ''सरस्वती की कृपा अगर मुझ पर हो तो समय आने पर वे ही

मेरी सुस्ती भगायेंगी और मुझसे कविता लिखवायेंगी। तब तक प्रतीक्षा करूँगा।''

इतने में तेज नामक एक योगी उस गाँव में आया और वहीं रहने लगा। उस योगी का कहना था कि सुस्ती और शिथिलता मनुष्य के लिए शाप हैं। गाँव भर में इसका खूब प्रचार हुआ कि वह योगी सुस्ती व शिथिलता को दूर भगाता है और इसके लिए आवश्यक उपाय सुझाता है। सोमशर्मा के मित्र उसे उसके पास ले गये।

तेज ने सोमशर्मा से विविध प्रकार के प्रश्न पूछे और सुस्ती भगाने के कई नुस्खे दिये।

सोमशर्मा ने योगी से बताया कि वह इन सबका प्रयोग कर चुका है और इनमें से किसी भी नुस्खे ने उसपर कोई प्रभाव नहीं दिखाया।

तेज ने यह सुनकर निराश होते हुए कहा, ''युवक, मैं अब तक यही समझता रहा कि मेरे लिए कोई भी काम असंभव नहीं है। लेकिन तुम्हारी सुस्ती को मिटाना मुझसे संभव नहीं है।''

सोमशर्मा मुस्कुराकर वहाँ से चलता बना, परंतु उसके मित्र उसके साथ नहीं गये। उन्होंने तेज से कहा, ''स्वामी, विचित्र बात यह है कि आपने इतनी आसानी से अपनी हार मान ली।''

तेज ने मंदहास करते हुए कहा, ''पुत्रो, जो अपनी सुस्ती को लेकर बहुत शर्मिंदा थे और सुस्ती को दूर भगाना चाहते थे, उनपर मेरे नुस्खों ने बड़ा ही प्रभाव डाला। सोमशर्मा अपनी सुस्ती पर शरमाता नहीं उल्टे उसे उसपर गर्व है। कविता करने से ज़्यादा सुस्त कहलाना ही उसे अधिक पसंद है। इसी वजह से मेरे नुस्खे कोई प्रभाव दिखा नहीं रहे हैं।''

''तो क्या उससे काव्य की रचना कराने का हमारा सपना इस जन्म में पूरा नहीं होगा?'' मित्रों ने योगी से पूछा।

तेज ने कहा, ''सच्चे कवि काव्य की रचना करने में सुस्ती नहीं दिखाते। सोमशर्मा में अपने को कवि कहलाने की अदम्य इच्छा है, पर उसमें काव्य रचने की योग्यता नहीं है। इसलिए सुस्ती की आड़ में वह अपनी कमज़ोरी को छिपा रहा है। कुछ महान कवियों ने काव्य लिखने के लिए उसे प्रोत्साहित भी किया, पर वह टस से मस न हुआ। भला, वह महाकवि कैसे हो सकता है? आगे से उसे महाकवि मत कहिये, महासुस्त

कहिये। आज ही मैं तीर्थ यात्रा पर निकल रहा हूँ। तीन-चार महीनों में यहाँ लौटकर आऊँगा।''

तेज ने सोमशर्मा के बारे में जो कहा, उसका गाँव भर में खूब प्रचार हुआ। उस दिन से लोग सोमशर्मा को महाकवि नहीं, महासुस्त कहकर संबोधित करने लगे। यह सुनकर सोमशर्मा अपमान के भार से झुक गया। जो एक दिन महाकबि कहलाता था, आज बह महासुस्त कहलाया जाने लगा। कैसी विडंबना!

सोमशर्मा में भावोद्वेग उमड़ पड़ा। अपने को सचमुच ही महाकवि साबित करने की प्रबल इच्छा उसमें जगी। उसने स्वयं लेखनी हाथ में ली और रात-दिन काव्य रचना के काम में तल्लीन हो गया। एकाग्रता के साथ उसने परिश्रम किया और यों तीन महीनों के अंदर ही उसने काव्य रच डाला। उसका राज सम्मान हुआ। अब लोग मुक्तकंठ से उसे महाकवि कहने लगे। अब कोई भी उसे सुस्त कहने का साहस नहीं करता।

चार महीनों के बाद तेज उस गाँव में फिर आया। सोमशर्मा के मित्रों ने उसके बारे में बताने के बाद कहा, "योगिवर, आपके जिन नुस्खों ने काम नहीं किया, वह काम हमारे मित्र के आग्रह ने कर दिखाया।'' गर्व-भरे स्वर में उन्होंने कहा।

तेज ने हँसते हुए सिर हिलाया और कहा, "पुत्रो, अटल संकल्प से सब कुछ साधा जा सकता है। संकल्प व आग्रह के अभाव में कुछ भी साधा नहीं जा सकता। मेरे नुस्खे मनुष्य में हठ उत्पन्न करने के लिए उपयोग में आते हैं। तुम लोगों ने परिश्रम किये बिना सोमशर्मा को महाकवि बनाया। तुम लोगों के द्वारा मैंने प्रचार किया कि वह महाकवि नहीं, महासुस्त है। इससे उसके आत्माभिमान को ठेस लगी, उसमें तीव्र क्षोभ पैदा हुआ, उसे अपने ऊपर ग्लानि हुई और भावोद्वेग के वश में आकर अन्त में उसने संकल्प किया। उसकी सोई हुई शक्ति जाग गई। फलस्वरूप उसकी प्रतिभा उभर आयी और उसने उसे काव्य रचने का प्रोत्साहन दिया। मेरे उपाय ने ही सच पूछो तो अप्रत्यक्ष रूप से काम किया और उसकी सुस्ती भगा दी और एक अच्छा काव्य रचवाया। जो भी हुआ, अच्छा ही हुआ।''

महापुरुषों के जीवन की झाँकियाँ - ६

महान मूर्तिकार और उसके प्रारंभिक समीक्षक

कौन नहीं जानता कि इटली के माइकेल ऐन्जेलो (१४७५-१५६४) विश्व के महानतम मूर्तिकारों में से एक था। लाखों लोग रोम में प्रार्थनाघरों की दीवारों तथा भीतरी छतों पर और अजायबघरों में उसकी कृतियों को बड़े ध्यान से देखते हैं और उसकी उत्कृष्टता पर चमत्कृत रह जाते हैं। कला की सैकड़ों पुस्तकों में उनके चित्र छपे रहते हैं। पूरे यूरोप को उस पर नाज है।

जब वह बच्चा था,उसकी नर्स उसे गोद में लिये पत्थर की एक खदान के निकट खड़ी रहती थी, जहाँ उसका पति संगतराश था। यह नन्हा बालक शैल खण्डों से टूटते प्रस्तर की परतों को बड़े ध्यान से देखता। पत्थरों के भिन्न-भिन्न आकारों में उसे रूपरेखाएँ दिखाई पड़ती थीं। एक दिन उसने एक उपकरण लेकर पत्थर के एक टुकड़े से अपनी पसन्द की एक आकृति बनाई। और सचमुच वह एक दिन एक महान मूर्तिकार बन गया। वह एक चित्रकार और कवि भी था।

उसके समय के समाज ने उसकी कलाकृतियों की ओर ध्यान नहीं दिया। वह गरीब था। समाज के प्रतिष्ठित वर्ग में उसके मित्र नहीं थे जो अभिजात समुदाय में उसे प्रसिद्धि दिला सकें। फिर भी, वह उद्यम करता रहा और समीक्षकों से अपनी कलाकृतियों की समीक्षा करने का अनुरोध करता रहा। समीक्षकों ने उसे हतोत्साहित कर दिया।

रोम एक प्राचीन नगर है। वहाँ शताब्दियों पुराने स्मारकों के खण्डहर भरे पड़े हैं।

एक बार नगर के उपान्त में एक भूगर्भित

मन्दिर के निकट खुदाई हो रही थी। माइकेल ऐन्जेलो, जो पास में खड़ा था, चिल्ला पड़ा, ''मैं जमीन के अन्दर एक नाजुक आकृति का सिर देख सकता हूँ, सावधानी से खोदो।''

मजदूरों ने सावधानी से खोदकर पूरी अखण्डित मूर्तिकला निकाली जो एक मनोहर मानव आकृति थी। यह खबर जंगल की आग की तरह फैल गई और सैकड़ों लोग– विख्यात कला प्रेमी, समीक्षक तथा पुरावस्तुओं के धनी संग्रहकर्ता वहाँ एकत्र हो गये। लोग उस कलाकृति की सुन्दरता की तारीफ करते थकते नहीं थे। ''पुराने जमाने के किसी महान कलाकार ने इसे बनाया होगा!'' एक व्यक्ति ने कहा। ''अभी तो ऐसी कलाकृति देखने को नहीं मिलती!'' दूसरे ने कहा।

बहुत लोग उस कलाकृति को लेने के लिए उत्सुक हो गये। किन्तु सैन जियरगिओ का कॉर्डिनल सबसे अधिक रकम देकर उसे अपने चर्च के लिए ले जानेवाला ही था।

''ओ युवा मूर्तिकार! तुम्हें भी ऐसी श्रेष्ठ कृति के निर्माण का स्वप्न देखना चाहिये।'' माइकेल ऐन्जेलो को एक समीक्षक ने कहा। ''यदि तुम बड़ा सपना देखोगे तो ऐसी उत्कृष्टता के कुछ अंश तक तो सफलता प्राप्त कर पाओगे।'' एक अन्य समीक्षक ने टिप्पणी की।

''सचमुच मैंने स्वप्न देखा और इसका सृजन किया!'' मूर्तिकार ने घोषणा की।

''क्या मतलब है तुम्हारा?'' अनेक उत्सुक आवाजें उठीं।

माइकेल ऐन्जेलो ने चुपचाप उस कलाकृति के निचले भाग में लिखे अपने प्रतीक चिह्न की ओर लोगों का ध्यान खींचा। इतना ही नहीं, वह अपने घर से उस आकृति की एक अन्य प्रतिकृति भी ले आया। फिर उसने स्वीकार किया कि उसने स्वयं उस मूर्ति को इस प्रकार रँगा कि पुरावस्तु दिखाई पड़े और रात में प्राचीन खण्डहरों के निकट जमीन में गाड़ दिया।

लज्जा और परेशानी के क्षणों के बाद समीक्षकों और कला-प्रेमियों ने माइकेल ऐन्जेलो की प्रतिभा को सराहा। फिर उसकी किसी ने उपेक्षा नहीं की।

(एम.डी.)

देवसेना की कहानी

अवंति देश की राजधानी में, एक सुप्रसिद्ध विष्णु मंदिर हुआ करता था। विष्णु शर्मा उस मंदिर का प्रधान पुजारी था। उसने संगीत व नाट्य शास्त्र का गहरा अध्ययन किया और उन में प्रवीण हो गया। राजस्थान के संपन्न लोगों के बच्चे उसके यहाँ ये विद्याएँ सीखने आते थे।

देवसेना, विष्णु शर्मा की इकलौती पुत्री थी। उसके बचपन में ही उसकी माँ का निधन हो गया। यौवन में प्रवेश करते-करते उसने नृत्य-संगीत कलाएँ बखूबी सीख लीं; सब उसकी कला की प्रशंसा करने लगे। उसका नृत्य देखने साधारण लोग व पुर प्रमुख सब आते थे।

राजा बिक्रमसेन देवसेना के कौशल की जानकारी मिलने पर बहुरूपिये के वेष में उसका नृत्य देखने आया। उसकी प्रतिभा को देखकर वह अवाक् रह गया। उसके नृत्य- गान -माधुर्य व सुन्दरता से बहुत प्रभावित हो गया। उसने राजधानी लौटने के बाद विष्णुशर्मा को खबर भेजी कि उसकी पुत्री देवसेना को राज नर्तकी के पद पर नियुक्त किया जाता है।

इसके उत्तर में देवसेना ने राजा को पत्र लिखा, जिसमें उसने स्पष्ट रूप से बताया कि वह कलाओं के लिए समर्पित है, रसिक जनता व पंडितों के सम्मुख ही नृत्य प्रदर्शित करेगी और राजनर्तकी बनकर दरबार के नियमों का पालन करना उससे संभव नहीं और उसे यह क़तई पसंद नहीं। देश भर में यह बात फैल गई। लोग यहाँ तक कहने लगे कि राजा उससे बिवाह करना चाहते हैं, पर देवसेना ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

''देवसेना नृत्य व संगीत में कोविद है, इसलिए वह किसी महान कलाकार से विवाह करना चाहती होगी,'' एक शिल्पी को ऐसा लगा और उसने देवसेना की आकृति को एक चिकने पत्थर पर तराश कर वह प्रतिमा भेंट स्वरूप देवसेना के

एस.डि.ए. अजीज

पास भेजी। उसने उससे विवाह रचाने का भाव भी व्यक्त किया। उसको एक कवि ने अपने काव्य की नायिका बनाया और एक महाकाव्य रच डाला। एक चित्रकार ने उसके सौंदर्य को एक कलाकृति के रूप में चित्रित किया और उससे विवाह करने की इच्छा जतायी।

इस प्रकार कई लोग उससे विवाह करने आगे आये। यह सब देखकर देवसेना घबरा गयी। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए। वह अपने बचपन की सहेली सुभाषिणी से सलाह माँगने गयी, जो राजवैद्य की पुत्री थी।

सुभाषिणी बड़ी ही विवेकशील थी। उसे अच्छे-बुरे की परख थी। उसने देवसेना से कहा, ‘‘तुम ब्रह्मचारिणी बनी रहना चाहती हो या किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह करना चाहती हो, जो सब प्रकार से तुम्हें अच्छा लगता है?’’

बिना हिचकिचाये देवसेना ने कहा, ‘‘मैं ऐसे व्यक्ति से ही विवाह करना चाहती हूँ, जो मेरे नृत्य, संगीत व सौंदर्य पर रीझकर नहीं, बल्कि मुझे देवसेना मात्र मानकर मुझसे पवित्र प्रेम करे।’’

उसके इस उत्तर पर सुभाषिणी खुश हुई और उसने कहा, ‘‘ठीक है। मेरे पिताश्री चिकित्सा हेतु कुछ मूलिकाओं को इस्तेमाल करते हैं, जिन्हें मैं बखूबी जानती हूँ। उनमें से दो मूलिकाएँ लाकर तुम्हें देती हूँ। उनमें से एक को खाने के बाद एक ही घंटे के अंदर तुम्हारा रूप विकृत हो जायेगा। तुम एकदम काले रंग की हो जाओगी। दूसरा खाने पर कुछ ही क्षणों में तुम्हारा रूप यथावत्‌ हो जायेगा।’’

विकृप करने वाली मूलिका को देवसेना ने उसी दिन खा लिया। एक घंटे के अंदर ही उसका रंग बदल गया। दूसरे ही दिन उसने उस शिल्पी, कवि व चित्रकार को ख़बर भेजी, जो उससे शादी करने के लिए तड़प रहे थे। अपने-अपने भाग्य पर आनंदित होते हुए ये तीनों उससे मिलने आये। परंतु, उसके रूप को देखकर स्तंभित रह गये।

‘‘दुर्भाग्यवश, मेरा यह रूप हो गया। आप तीनों में से मुझसे जो शादी करना चाहते हैं, उनमें से एक आगे आये।’’ देवसेना ने कहा।

बस, तीनों बिना कुछ बोले वहाँ से भाग गये।

बाह्य रूप को देखकर मनुष्य कितना आकर्षित हो जाता है, भ्रम में पड़ जाता है, इसका प्रत्यक्ष अनुभव देवसेना को हो गया।

उस समय, देवसेना का पिता वृद्ध विष्णुशर्मा

बीमार था। तिसपर अपनी बेटी के विकृत रूप को देखकर उससे रहा नहीं गया।

कुछ ही दिनों में वह स्वर्गवासी हो गया। अब दुनिया में देवसेना का कोई नहीं रहा। मानसिक पीडा से परेशान वह एक दिन रात को घर से चली गयी। नगर के बाहर आम के बगीचे में बेहोश होकर गिर गयी।

थोड़ी देर बाद जब होश आया, तब उसने अपने को एक झोंपडी में पाया। आश्चर्य में डूबी उसने देखा कि एक किसान युवक बड़ी ही दया भरी दृष्टि से उसे एक टक निहार रहा है।

देवसेना कुछ कहने ही वाली थी, इसके पहले ही उस युवक ने कहा, ''मेरा नाम मुकुंद है। सबेरे जब खेत जा रहा था, मैंने आपको एक वृक्ष के तले बेहोश पाया। बस, आपको अपने घर ले आया। क्या हुआ? बेहोश क्यों हो गयीं? आप कहाँ की रहनेवाली हैं?''

थोड़ी देर तक सकपकाने के बाद देवसेना ने कहा, ''इस दुनिया में मेरा कोई नहीं। मैं बिलकुल अकेली हूँ। जीवन से घृणा होने लगी है। कहीं चले जाने का निर्णय लेकर निकल पड़ी। रास्ते में बेहोश होकर गिर गयी। अपने घर ले आने के लिए कृतज्ञ हूँ।''

''आप अपने को अकेली कहती हैं। यह भी नहीं जानती कि आप को कहाँ जाना है। अच्छा यही होगा कि आप यहीं मेरे ही साथ रह जायें।''

''क्या आप भी अकेले ही हैं? क्या आपका कोई नहीं?'' देवसेना ने पूछा।

''हाँ, मेरा कोई नहीं। माँ-बाप चल बसे। दो एकड़ खेत है, उसी के आधार पर जी रहा हूँ। आप यहीं रह जाइये। साथ-साथ रह सकते हैं।'' मुकुंद ने कहा। देवसेना ने 'हाँ' कह दिया। फिर वह मुकुंद के साथ खेत जाने लगी और यथासंभव उसकी सहायता करने लगी।

यों एक महीना गुज़र गया। देवसेना को मुकुंद का स्वभाव, बहुत ही अच्छा लगा। वह उसके प्रति जो आदर-भाव दिखा रहा था, उससे वह बहुत संतुष्ट हुई। खूब सोच-विचारने के बाद वह एक निर्णय पर आयी। खेत के कामों को पूरा करने के बाद जब वे दोनों घर लौट रहे थे, तब उसने मुकुंद से कहा, ''मुकुंद, इधर बहुत दिनों से हम एक साथ रह रहे हैं। मैं जानना चाहती हूँ कि मेरे बारे में तुम्हारी क्या राय है?''

मुकुंद ने तुरंत कहा, ''तुम बहुत अच्छा बोलती हो। अच्छाई तुम में भरी पड़ी है। काफी लोकज्ञान रखती हो। इससे बढ़कर एक स्त्री को और क्या चाहिये।''

देवसेना हँस पड़ी और बोली, ''मैं क्या थी और क्या हूँ, तुम्हें बताना चाहती हूँ।'' फिर उसने अपनी पूरी कहानी सुनायी।

आश्चर्य में डूबे मुकुंद ने कहा, ''तुमने सुखी जीवन बिताया। जान-बूझकर तुमने अपने आप को विकृत बना लिया और मेरे साथ मिलकर खेत का काम भी करने लगी हो।''

''खेत का ही काम नहीं। तुम्हारी पत्नी बनकर जीना चाहती हूँ। मेरा रूप अब काला है। फिर से सुंदर दीखनेवाली मूलिका खा लूँगी।'' कहकर कंधे में लटक रही थैली में हाथ डालने ही वाली थी कि मुकुंद ने वह थैली छीन ली और उसे दूर फेंक दी। फिर कहा, ''देवसेना, मुझे तुम्हारी सुंदरता नहीं चाहिये। तुम जैसी सदगुण संपन्न धर्मपत्नी चाहिये।''

मुकुंद की बातें सुनकर देवसेना की आँखों में आँसू भर आये। दो हफ्तों के बाद उस गाँव के रामालय में उनकी शादी हुई। तब बचपन की सहेली सुभाषिणी भी उस बिवाह में उपस्थित हुई। उसने देवसेना से कहा, ''कुछ भी हो, तुमने अपनी इच्छा पूरी कर ली।'' और बधू-बर का अभिनंदन किया।

''हाँ सुभाषिणी, मैं आज सचमुच ही बेहद खुश हूँ। मेरे बाह्य सौंदर्य को देखकर, मुझसे बिवाह करने के लिए जो उतावले थे, उनसे मुकुंद कहीं महान है।''

देवसेना ने कहा, ''इसके व्यक्तित्व की तुलना में वे कुछ भी नहीं हैं। मैं विकृत हूँ, फिर भी इसने हृदयपूर्वक मुझे चाहा, मुझसे प्रेम किया। सिर्फ मुझसे, मेरी आत्मा से; मेरे शरीर से नहीं, मेरी कला और कीर्ति से नहीं। मैं यही तो चाहती थी। यह लाखों में एक है। इससे बिवाह करके मैं धन्य हो गयी। यह ग़रीब किसान है, पर सर्वगुण संपन्न है। इससे बिवाह करना अपना सौभाग्य समझती हूँ।'' उस समय उसकी आँखों में आनंद ही आनंद था।

तेरा जैसा

रामेश और कामेश पड़ोसी किसान हैं। गाँव में सब लोग रामेश को शब्दों का मांत्रिक कहा करते हैं। उसकी हर बात में कोई न कोई विलक्षणता होती है। कामेश की तीव्र इच्छा है कि रामेश को हराऊँ और लोगों की प्रशंसा पाऊँ। परंतु जब कभी भी उसने इस दिशा में प्रयत्न किया, हारता ही रहा।

उस साल उस गाँव के मंदिर में गाँव के प्रमुख श्रीराम नवमी के उत्सव को लेकर चर्चा करने लगे। रामेश जो भी सलाहें देता था, उनका खंडन भीमेश नामक आदमी करने लगा। अब रामेश ने कोई सलाह न देने का निश्चय कर लिया।

कामेश ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा, ''क्या बात है रामेश? सलाह देना बंद क्यों कर दिया?''

''जहाँ हमारी स्थिति हमारे अनुकूल नहीं, वहाँ चुप रहने में ही भलाई है,'' रामेश ने कहा।

''तेरी बात कोई मान नहीं रहा इसलिए नाराज़ हो गये?'' कामेश ने उसे भड़काते हुए कहा।

''ग़रीब की नाराज़ी उसे ही हानि पहुँचाती है,'' रामेश ने कहा।

''समझ गया। तुम्हारा बड़प्पन कोई मानने के लिए तैयार नहीं है, इसलिए क्या सीताराम के विवाहोत्सव में भी भाग नहीं लोगे?'' ''भगवान के विवाह पर कौन छोटा और कौन बड़ा। सब समान हैं।'' रामेश ने कहा।

''सबको समान मानते हो? हर कोई पालकी में बैठे तो ढोयेगा कौन?'' कामेश ने इस कहावत का उपयोग करते हुए प्रशंसा पाने के उद्देश्य से सबकी ओर देखा। रामेश ने तुरंत कहा, ''तेरा जैसा कोई न कोई तो होगा ही।'' उसकी बात पर सब ठठाकर हँस पडे। कामेश का चेहरा फीका पड़ गया।

-श्री रामकमल

पंच कल्याणी

जब ब्रह्मदत्त काशी पर राज्य करते थे, उन दिनों बोधिसत्व ने एक उत्तम नस्ल के घोड़े के रूप में जन्म लिया। वह राजा के घोड़ों में उत्तम घोड़ा और पंच कल्याणी माना जाता था। इस कारण उसका पोषण और अलंकार विशेष रूप से राज परिवार की गरिमा के अनुरूप किया जाता था।

उस घोड़े के लिए तीन साल पूर्व के बढ़िया व पुराने धान के साथ बनाया गया खाना तैयार किया जाता था। उसका खाना एक हज़ार स्वर्ण मुद्राओं के मूल्य के थाल में परोसा जाता था। वह जिस घुड़साल में बंधा रहता था, वह हमेशा सुगंधित द्रव्यों से महकता रहता। उस घुड़साल के चारों तरफ़ सुन्दर परदे लटकते रहते थे। ऊपर की चांदनी सोने के फूलों से सजी रहती थी। चारों तरफ की दीवारें खुशबूदार फूलों से सुशोभित रहतीं, दिन-रात वह घुड़साल अगरबत्तियों तथा सुगंधित द्रव्यों के परिमल से देदीप्यमान दिखाई देता था।

ऐसे उत्तम अश्ववाले राजा के वैभव को देख अड़ोस-पड़ोस के सारे सामंत राजा ईर्ष्या करते थे। वे सभी इस ताक में रहते थे कि कैसे उस राज्य को हड़प लें। लेकिन उनमें से किसी एक को काशी पर आक्रमण करने का साहस नहीं होता था।

इसलिए उन सबने मिलकर काशी पर आक्रमण करने का निश्चय किया। एक बार इकट्ठे सात सामंत राजाओं ने काशी राजा के पास एक दूत के द्वारा यों संदेशा भेजा, ''आप बिना देरी किये तुरंत अपना राज्य हमें सौंप दीजिए, वरना हमारे साथ युद्ध के लिए तैयार हो जाइये। हम सात राजाओं की सम्मिलित सेना के साथ आप के राज्य की सीमा पर आप के उत्तर का इन्तजार कर रहे हैं।''

इस पर काशी राजा ने अपने मंत्रियों को बुलवा कर सामंत राजाओं का संदेशा उन्हें सुनाया।
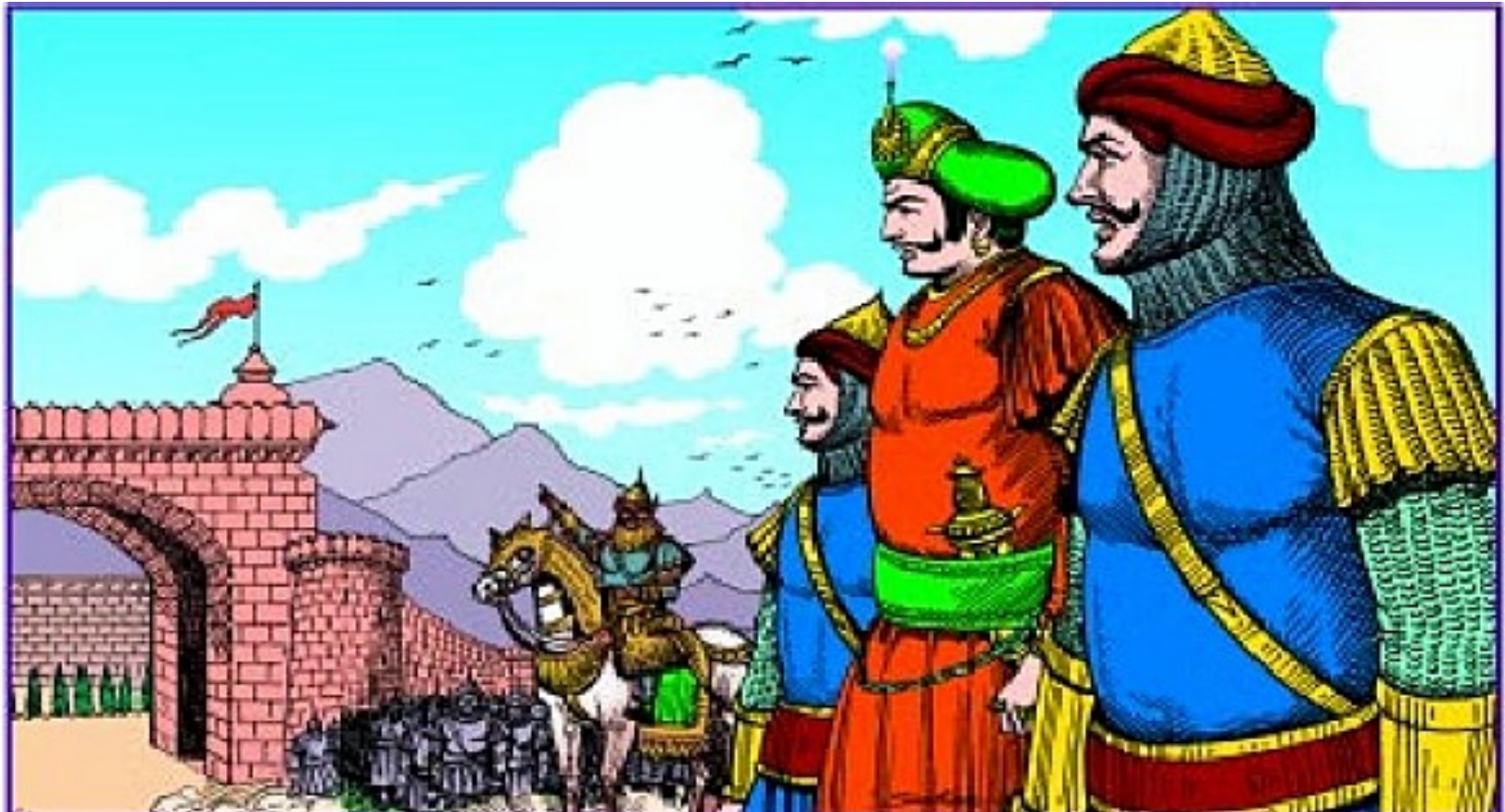
मंत्रियों ने सोच-समझकर राजा को समझाया, ''महाराज, आपको युद्ध क्षेत्र में स्वयं जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। हमारे सेनापति वीरवर्मा को सेना के साथ भेज दीजिए, वे बहादुर और कुशल योद्धा हैं। वही दुश्मन को पराजित कर शीघ्र लौट आयेंगे। अगर वे दुश्मन को हरा नहीं सकेंगे तो फिर आगे की बात सोची जाएगी।''

इस पर राजा ने सेनापति को बुलवाकर कहा, ''वीरवर्मा, हम पर एक भारी विपत्ति आ पड़ी है। एक साथ सात सामंत राजा हमारे देश पर हमला करने जा रहे हैं। क्या आप उन सातों को पराजित कर सकते हैं?''

इसके उत्तर में वीरवर्मा ने कहा, ''महाराज, यदि आप अपने प्यारे घोड़े पंच कल्याणी को मेरे हाथ सौंप दें तो उन सातों सामंतों को क्या, सारे देशों को पराजित कर कुशलपूर्वक लौट सकता हूँ।'' सेनापति का जवाब सुनकर राजा खुश हुए और पंच कल्याणी को उनके हाथ सौंपकर शत्रु पर विजय प्राप्त करने भेजा।

राजा से विदा लेकर पंच कल्याणी को साथ ले सेनापति वीरवर्मा बड़े उत्साह के साथ उसी वक़्त युद्ध भूमि की ओर चल पड़ा।

इसके बाद वीरवर्मा क़िले से बिजली की भांति निकल पड़ा। हिम्मत के साथ लड़कर प्रथम सामंत को बुरी तरह से हराया और उसे बन्दी बनाया। फिर युद्ध क्षेत्र में जाकर दूसरे सामंत को बन्दी बनाया। इस तरह उन्होंने एक-एक करके पाँच सामंतों को हरा कर क्रमशः उन्हें बन्दी बनाया।

छठे सामंत के साथ युद्ध करके उसको भी हराया, लेकिन इस बीच घोड़ा बुरी तरह से घायल हो गया और उसके घावों से खून बहने लगा।

वीरवर्मा ने सोचा कि पंच कल्याणी को एक

द्वार के पास बांधकर दूसरे घोड़े को लेकर युद्ध क्षेत्र में चला जाये। इस ख्याल से वीरवर्मा पंच कल्याणी के निकट पहुँचा और उसकी लगाम, जीन वगैरह खोलने को हुआ।

उस वक़्त पंच कल्याणी के रूप में स्थित बोधिसत्व ने आँखें खोलकर देखा। वह मन ही मन यह सोचकर दुखी होने लगा, 'हे वीर, तुम भी कैसे भोले हो? मुझे घायल देख एक और घोड़े को दुश्मन से लड़ने के लिए तैयार कर रहे हो। सातवें व्यूह को भेदकर सातवें सामंत राजा को बन्दी बनाना बेचारा वह क्या जाने? उस पर विश्वास करके लड़ाई के मैदान में ले जाओगे तो अब तक मैंने जो विजय प्राप्त की, वह सब बेकार जाएगी। तुम अकारण ही दुश्मन के हाथों मर जाओगे। हमारे मालिक काशी के राजा बड़ी आसानी से सामंत राजाओं के हाथों में फँस जायेंगे। तुम यह समझ न पाये कि सातवें सामंत राजा को हराना सिर्फ़ मेरे लिए ही संभव है, कोई दूसरा घोड़ा उसको किसी भी हालत में जीत नहीं सकता!'

यों विचार कर वह चुप नहीं रहा। घायल होकर पड़ा हुआ वह पंच कल्याणी वीरवर्मा को अपने निकट बुलाकर बोला, ''हे वीर-शूर वीरवर्मा, यह अच्छी तरह से समझ लो कि सातवें व्यूह को भेदकर सातवें शत्रु सांमत राजा को पकड़ सकनेवाला घोड़ा मुझे छोड़कर दूसरा कोई नहीं है। अब तक मैंने जो श्रम किया है उसे व्यर्थ मत जाने दो। हर हालत में तुम्हें हिम्मत और पराक्रम को नहीं खोना है। इसके साथ आत्म-विश्वास और सहनशीलता की ज़रूरत होती है। इसलिए तुम मुझ पर पूर्ण रूप से विश्वास रखो। घायल होने मात्र से मुझे कमजोर मत समझो; मेरी बात सुनकर मत त्यागो। मेरे घाव पर तुरंत मरहम पट्टी

करके उसे चंगा कर दो। फिर से मुझे लड़ाई के मैदान में ले जाओ।'' यों अनेक प्रकार से पंच कल्याणी ने वीरवर्मा को समझाया।

वीरवर्मा ने पल पर भी विलंब किये बिना पंच कल्याणी की मरहम पट्टी करवा दी। उसके चंगे होने पर ज्यों ही वह उस पर सवार हुआ, त्यों ही वह बिजली की गति से निकल गया और सातवें व्यूह को भेद डाला। इस पर वीरवर्मा ने सातवें सामंत को भी बन्दी बनाया।

इस तरह युद्ध में वीरवर्मा की विजय हुई। बन्दी बने सातों सामंत राजाओं को वीरवर्मा के सैनिकों ने काशी राजा के सामने हाज़िर किया। उस समय पंच कल्याणी के रूप में स्थित बोधिसत्व वहाँ आ पहुँचे।

वे राजा से बोले, ''राजन, ये सातों सामंत राजा आपके ही समान राजा हैं। इनको सताना आपको शोभा नहीं देता। इनका अपमान करना भी उचित नहीं है। आप अपनी इच्छा के मुताबिक़ किसी शर्त को उनसे पूरा करा कर छोड़ देना न्याय संगत होगा। आप अपने दुश्मन के प्रति भी उदार बने रहिए। इसी में आपका बड़प्पन है। काशी राज्य की महान परम्परा और गरिमा के अनुकूल धर्म का पक्ष लेकर न्यायपूर्वक शासन कीजिए।'' यों राजा को पंच कल्याणी ने उपदेश दिया। उसी वक़्त सिपाहियों ने आकर घोड़े की सजावट वाली सारी चीज़ें हटा दीं। शीघ्र ही पंच कल्याणी के रूप में स्थित बोधिसत्व पंच भूतों में मिल गये।

इस के बाद काशी राजा ब्रह्मदत्त के आदेशानुसार राज सम्मान के साथ पंच कल्याणी घोड़े की अत्येष्टि क्रिया संपन्न की गई। इसके बाद सेनापति वीरवर्मा का बड़े पैमाने पर अभिनंदन हुआ।

सातों सामंत राजाओं को उनके राज्यों में वापस भेज दिया गया। वे सभी अपनी ईर्ष्या और शत्रुता की भावना पर बहुत लज्जित हुए। उन सबने राजा ब्रह्मदत्त से क्षमा माँगी। वे हमेशा के लिए काशी राज्य के मित्र बन गये। उस दिन से बोधिसत्व के सुझाव के अनुसार काशी राज्य में न्यायपूर्वक शासन होने लगा।

रामायण

भरत को उसके मामा आकर ले गये। शत्रुघ्न के बिना वह कोई भी आनन्द न उठा सकता था, इसलिए वह साथ में शत्रुघ्न को भी ले गया। भरत के मामा के घर बिना किसी कमी के उनके दिन कट रहे थे। परन्तु उनको कभी-कभी यह मन में बींधता था कि वे अपने बूढ़े पिता को छोड़कर चले आये हैं।

अयोध्या में महाराजा दशरथ को भी यही चिन्ता थी कि उसके दो लड़के दूर चले गये हैं। पर सच कहा जाये तो उसके प्राण रामचन्द्र पर ही थे। ऐसा कोई सद्गुण न था जो उनमें न हो, प्रजा को भी राम पर गर्व था।

'मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ। मेरा मन यह देखने के लिए उतावला हो रहा है कि राम गद्दी पर कब बैठता है।' दशरथ सोच रहा था।

मन्त्रियों से जब मन्त्रणा की तो उन्होंने भी यही परामर्श दिया। अब यह देखना था कि इस विषय में प्रजा की क्या राय है और अन्य राजाओं का क्या रुख है। इसलिए दशरथ ने सब राजाओं के पास खबर भिजवाई। क्योंकि वे दोनों बहुत दूर थे, इसलिए दशरथ ने कैकेई के पिता, केकय महाराजा और सीता के पिता, महाराजा जनक को निमन्त्रण न भेजकर यथासमय शुभवार्ता पहुँचाने का निश्चय किया।

निमन्त्रण पाकर सब राजा आये और दशरथ के दरबार में यथोचित आसनों पर आसीन हो गये। नगर के सभ्य और ग्रामवासी भी राजसभा में आये। दशरथ ने उनसे कहा कि कितनी श्रद्धापूर्वक उसने राज्य किया था। ''अब मैं वृद्ध हो गया हूँ। अब मुझे विश्राम की आवश्यकता

है। यदि आप सब की सहमति हो, तो मैं अपने बड़े लड़के राम का पट्टाभिषेक करना चाहता हूँ। राम पराक्रमी है। बीर और साहसी है। साथ ही, शान्त, गंभीर, बिनम्र और सहनशील है। बह सर्बगुण सम्पन्न है और सब प्रकार से राजा होने योग्य है। वह किसी भी बात में मुझ से कम नहीं है। वह तीनों लोकों का प्रभु होने योग्य है। मेरा विश्वास है कि उसका पट्टाभिषेक करने में ही राज्य का कल्याण है। यदि आपको मेरा निश्चय पसन्द है, तो आप अपनी अनुमति दीजिये। यदि आपको यह पसन्द नहीं है, तो जो आप उचित मार्ग समझें उसे सुझाइये।'' दशरथ ने कहा।

यह सुन सभा में सब बड़े सन्तुष्ट हुए। राम के पट्टाभिषेक का एक कंठ से सब ने समर्थन किया।

''महाराज, राम का पट्टाभिषेक और उत्सब जल्दी ही करवाइये।'' उन्होंने कहा।

दशरथ ने यह दिखाया जैसे कुछ जानता ही न हो। ''मैंने तो अभी राम के पट्टाभिषेक का प्रस्ताव भी न रखा था कि आप सब समर्थन करने लगे। क्या कारण है इसका? क्या आपको मेरा शासन पसन्द नहीं है? मैं इतने न्यायपूर्ण ढंग से शासन कर रहा हूँ, फिर आप क्यों चाहते हैं कि राम राजा बने। और कुछ नहीं, मैं सिर्फ यह जानना चाहता हूँ।''

यह कहते ही, दशरथ जो सुनना चाहते थे, वही हुआ। सभासदों ने राम की भूरि भूरि प्रशंसा की। ''यदि उसको राजा बना दिया गया, तो उससे अधिक महत्वपूर्ण बात कोई और न होगी। बे आपके सच्चे उत्तराधिकारी होंगे। उन्होंने यह बात सिद्ध कर दी है। उन्होंने अल्प आयु में ही बड़े-बड़े दुष्ट राक्षसों का संहार कर ऋषि-मुनियों का हृदय जीत लिया है। प्रजा, साधु-सन्त सभी उनके अधीन सुरक्षित रहेंगे।'' उन्होंने कहा।

उनकी बातें सुनकर दशरथ ने कहा, ''मुझे यह देख बड़ा सन्तोष हो रहा है कि आप भी मेरी तरह सोच रहे हैं। मैं यही जानना चाहता था कि आप सब की भी राय यही है या केवल मेरी इच्छा में हाँ में हाँ मिला रहे हैं। यह जानकर मुझे अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि आप सब भी हृदय से राम को राजा के रूप में देखना चाहते हैं और इसी में सबका कल्याण देखते हैं।'' फिर उन्होंने अपने पुरोहित, बसिष्ठ, बामदेब आदि को बुलवाया। ''महामुनियो, इस चैत्र मास में शुभकार्य किये

जा सकते हैं। इसलिए राम के पट्टाभिषेक का प्रयत्न शुरू कीजिये। उसके लिए आवश्यक सामग्री मँगवाइये।'' वसिष्ठ ने तुरंत नौकरों से कह दिया कि किन किन वस्तुओं की आवश्यकता है। जल्दी ही पट्टाभिषेक के लिए आवश्यक वस्तुएँ एकत्रित कर दी गईं।

दशरथ ने अपने सारथी सुमन्त्र से राम को अपने पास बुलवाया। सुमन्त्र जाकर राम को रथ में ले आया। दशरथ ने राम से कहा, ''बेटा, हम तुम्हारा राज्याभिषेक करेंगे, धर्म का पालन करते हुए, अच्छी तरह राज्य करो।'' यह कह दशरथ ने राम को भेज दिया। इसके बाद दूर देश से आये हुए राजा और लोग चले गये। राम के कुछ मित्रों ने तुरंत यह खबर कौशल्या को दी। कौशल्या ने खुशी में उनको सोना, हीरे मोती वगैरह उपहार में दिये।

सब के चले जाने के बाद दशरथ ने अपने मन्त्रियों से सलाह मशवरा किया। ''कल पुण्यमी नक्षत्र है। पट्टाभिषेक के लिए बहुत अच्छा है। इसलिए कल ही इसे सम्पन्न किया जाये।'' यह निश्चय करके राम को बुलाने के लिए उसने सारथी को भेजा। सारथी के कहने पर कि पिताजी बुला रहे हैं, राम ने पूछा, ''मैं अभी वहीं से तो आ रहा हूँ। फिर क्यों बुला रहे हैं?''

''महाराजा आपको देखना चाहते हैं। आना चाहें, तो आइये, नहीं तो आपकी मर्जी।'' सारथी ने कहा। राम सारथी के साथ निकल पड़े। क्योंकि और कोई न था, इसलिए सिर नवाँते राम को उठाकर उन्होंने गले लगा लिया, उन्नत आसन पर बिठाकर कहा, ''बेटा, मैं बूढ़ा तो हो ही गया हूँ और ज्योतिषियों का यह भी कहना है कि मेरा बुरा समय आ रहा है। खराब सपने आ रहे हैं। इसलिए जब मेरे शरीर में प्राण हैं, तभी गद्दी सम्भाल लो। आज पुण्यमी है। कल पुनर्वसु है। शुभ कार्य के लिए यह बहुत अच्छा है।''

''आज रात तुम और पत्नी दूब के घास पर सोओ और उपवास करो। मुझे ऐसा लगता है कि तम्हारे भाई भरत के ननिहाल से लौटने से पहले ही यह काम हो जाये तो अच्छा है; यद्यपि उसको भी बड़ों के प्रति भक्ति है, फिर भी मनुष्य का स्वभाव बड़ा चंचल होता है।''

राम पिता की अनुमति पर वहाँ से जब अपनी माता के महल में गया तो कौशल्या राज्यलक्ष्मी की प्रार्थना कर रही थीं। राम के आने से पहले ही

उसके बाद माताओं की अनुमति पाकर सीता के साथ वे अपने महल में चले गये।

उस दिन रात को सीता और राम से दशरथ की इच्छा पर उपवास का अनुष्ठान कराकर, वसिष्ठ जब रथ में सवार होकर जा रहे थे, तो उनको गलियों में झुण्ड के झुण्ड लोग दिखाई दिये। कल के उत्सव के लिए वे खुशियाँ मना रहे थे। सड़कों पर पानी छिड़का गया था। तोरण सजाये जा रहे थे, हर घर पर झंडा फहरा रहा था। स्त्रियाँ, बच्चे, बूढ़े सभी पट्टाभिषेक का इन्तज़ार कर रहे थे।

वसिष्ठ के चले जाने के बाद, राम ने स्नान किया, सीता के साथ हवन किया। निश्चल मन से नारायण के मन्दिर में भगवान का ध्यान करके वहीं वे एक प्रहर सो गये। सवेरे प्रभात गायकों ने उनको उठाया। संध्या आदि के पूरा करते करते सवेरा हो गया। ब्राह्मणों ने पुण्य वाचन किया। मंगल बाद्यों से अयोध्या गूंज उठा।

सवेरा होते ही लोगों ने अपने घरों को अलंकृत किया, घर के सामने पानी छिड़ककर फूल बिखेरे। सुगन्धित द्रव्य जलाये गये। लोग खड़े-खड़े पट्टाभिषेक के बारे में ही बातें कर रहे थे। बच्चे घरों के सामने खेलते खेलते कह रहे थे, ''मैं भी आज पट्टाभिषेक देखने अपने माता-पिता के साथ जाऊँगा।'' खेलनेबाले खेल रहे थे और गानेबाले गा रहे थे।

पर उस दिन एक और नाटक भी शुरू हुआ। कैकेई के पास एक कुबड़ी दासी थी, नाम था मन्थरा। वह कुटिल थी। वह दुष्टा और ईर्ष्यालु

सुमित्रा को पट्टाभिषेक की सूचना मिल गई थी, इसलिए सुमित्रा, लक्ष्मण और सीता को लेकर कौशल्या के महल में आ गई थीं।

राम ने माँ को नमस्कार करके पट्टाभिषेक की बात कही, ''माँ, बताओ, कल के पट्टाभिषेक में मुझे और सीता को क्या क्या करना है, यह बताओ और करवाओ।''

राम ने लक्ष्मण से कहा, ''लक्ष्मण, तुम भी मेरे साथ सारी भूमिका का परिपालन करना। हम दोनों एक ही हैं, यदि मैं राजा हूँ तो तुम भी राजा हो। मेरा दायित्व तुम्हारा दायित्व भी है। मेरा कर्त्तव्य तुम्हारा कर्त्तव्य भी है। हम दोनों दो तन एक प्राण हैं। मैं तुम्हारे बिना अधूरा महसूस करता हूँ। हम दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। इसलिए हम दोनों समस्त सुखों का उपभोग एक साथ करेंगे।''

थी। वह कैकेई की परम भक्त और वह सिर्फ उसी का भला चाहती थी। मन्थरा कैकेई के महल में गई, वहाँ से उसने अयोध्या में होते उत्सव देखे। उसे आश्चर्य हुआ। बगल में सफेद साड़ी पहने एक दासी को देख उसने पूछा, ''यह सब क्या हो रहा है? कौशल्या ने क्या कोई व्रत किया है, जो लोगों को यों दान दे रही है। या दशरथ कोई उत्सव करने की सोच रहे हैं?''

दासी खिल खिलाकर हँसी। फिर उसने कहा, ''सबेरा होते ही, राजा राम का पट्टाभिषेक करने जा रहे हैं।''

कुबड़ी मन्थरा के लिए यह खबर कड़वी लगी। वह यह सुनकर जलभुन गई। वह महल की छत से उतर आई। कैकेई के शयनकक्ष में जाकर उसे उठाया, ''उठो, उठो, आपका घर जला जा रहा है, आप तो फूली न समाती थीं कि राजा को जितना आप पर प्रेम है उतना किसी पर नहीं है, अब और फूला समाना।''

''तुम्हें देखकर लगता है, जैसे कुछ हो गया हो। सब ठीक है न?'' कैकेई ने पूछा।

''कल दशरथ, राम का पट्टाभिषेक करने जा रहे हैं और क्या होगा? यह सुनते मेरा कलेजा खिसक गया। क्योंकि मैं आपका हित चाहती हूँ, इसलिए यह सुनते ही आपके यहाँ भागी भागी आयी हूँ।'' मन्थरा ने कहा।

''सचमुच मन्थरा? कितनी अच्छी खबर लायी हो।'' कहते कहते कैकेई का मुँह खिल सा उठा। बिस्तरे पर से उठी। अपना एक गहना

उतारकर उसे देते हुए कहा, "यदि और भी कुछ चाहोगी, तो दे दूँगी।"

मन्थरा को कैकेई का यह रुख बिल्कुल पसन्द न आया। उसने अपनी मालकिन से कहा, "आप पर जो आपत्ति आनेवाली है, उसे आप नहीं समझ रही हैं। नहीं तो दुःखी होने के बदले आप को यों खुशी होती? आपके बदले मैं ही रोऊँगी। पूछिये क्यों? कल राम का पट्टाभिषेक होते ही, कौशल्या राजमाता बन जायेंगी। आप उनकी परिचारिका बनेंगी। राम के अन्तःपुर की स्त्रियों की दासी बनेंगी, आप के पुत्र भरत और उसकी सन्तान का नामों निशान न रहेगा। कहा था कि मुझे इनाम देंगी। इनाम तो तभी मैं लूँगी, जब भरत का राज्याभिषेक होगा। भरत मामा के घर हैं, नहीं तो क्या राजा आप पर प्रेम के कारण, उसका पट्टाभिषेक न करते?"

मन्थरा इस प्रकार कैकई को बहाकाने की कोशिश करती रही और उसके मन में जहर उगलती रही। धीरे-धीरे कैकई पर जहर का असर होने लगा और उसके विचार में परिवर्तन आने लगा। वह कैकेई को फिर समझाने की कोशिश करने लगी। उसने कहा, "राम के राजा होने के बाद, भरत के यहाँ आने की आवश्यकता ही नहीं, वहाँ से वे सीधे जंगल जा सकते हैं। क्योंकि राम उनको जीने न देंगे। आपने इस अभिमान में कि आपके पति आपको अधिक चाहते हैं, कौशल्या की परवाह न की। क्या अब वे आपसे बदला न लेंगी। यदि आपमें दम है तो भरत का पट्टाभिषेक करवाइये। भरत के प्रतिस्पर्धी राम को वन में भिजवाइये। इतने बड़े राज्य का राजा भरत होगा। आप राजमाता का आदर पायेंगी। राम यदि राजा हुए तो आपका पतन अवश्य है। तब आपका मुँह देखनेवाला कोई नहीं होगा।"

ये बातें कैकेई को धीरे-धीरे जँचने लगीं। वह केवल अपने और अपने बेटे के स्वार्थ के बारे में सोचने लगी। उसके हाव-भाव और विचार बदल गये। चेहरे पर कठोरता आ गई। क्रुद्ध हो मन्थरा को देखा और कहा, "हाँ, भरत को ही राजा होना चाहिए। राम को वन जाना ही होगा। पर यह कैसे सम्भव है?"

हीरे की दूरबीन

एक शहर में श्रीगुप्त नामक एक व्यापारी था। एक बार श्रीगुप्त के रिश्तेदारों के घर में एक शादी हो रही थी। उसके रिश्तेदार एक गाँव में थे, इसलिए श्रीगुप्त पैदल ही उस गाँव की ओर चल पड़ा।

रास्ते में रंगनाथ नामक एक व्यक्ति से उसकी मुलाक़ात हुई। रंगनाथ शहर के निकट के एक गाँव का निवासी था। वह अपने खेत में तरकारी पैदा करता था। प्रति दिन शहर में जाकर उन्हें बेच देता और संध्या तक अपने गाँव को लौट आता। श्रीगुप्त रंगनाथ को जानता न था, पर रंगनाथ श्रीगुप्त को जानता था।

वे दोनों जिस रास्ते से गाँव की ओर जा रहे थे, उस रास्ते से हटकर थोड़ी दूर पर भूतों का एक महल था। एक जमाने में वह महल एक जमीन्दार का था। मगर एक बार उसके रिश्तेदारों ने गुंडों की मदद से जमीन्दार के महल पर हमला किया और जमीन्दार के परिवार की हत्या करके घर लूटने का प्रयत्न किया। उस समय जमीन्दार के घर के कुछ लोग बचकर भाग निकले; मगर वह महल बुरी तरह से लूटा गया। धीरे-धीरे वह महल उजड़ गया। और यह अफवाह फैल गई कि उन खण्डहरों में भूतों का निवास है। अलावा इसके वह रास्ते से थोड़ी दूर पर था। इसलिए किसी ने उधर जाने का साहस न किया।

उस महल के निकट पहुँचने पर रंगनाथ ने श्रीगुप्त से कहा, "महाशय, प्रतिदिन मेरे मन में यह इच्छा होती है कि उस उजड़े हुए महल को देख लूँ, लेकिन इस विचार से मैं अकेले उसमें जाने से संकोच करता हूँ कि कोई देख ले तो न मालूम क्या सोचे! इस वक़्त तो हम दो हैं। इसलिए क्या उस महल को देख लें?"

श्रीगुप्त ने हँसते हुए कहा, "तुम यह क्यों नहीं कहते कि भूतों के डर से आज तक नहीं गये?"
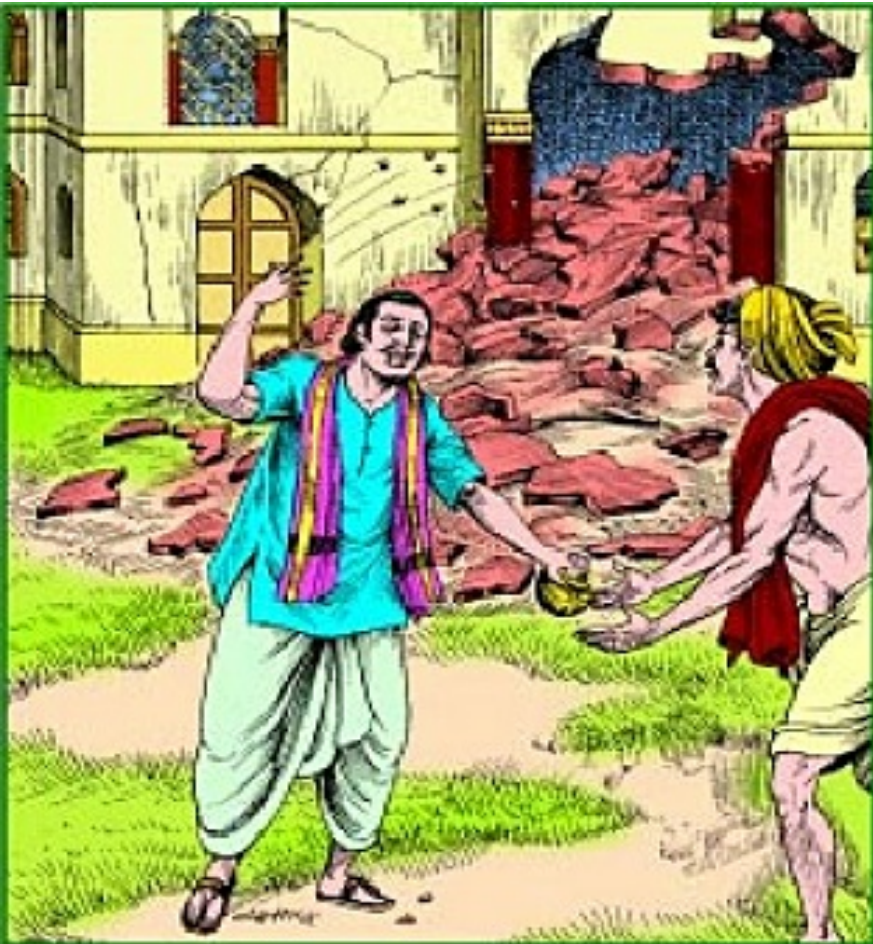
"मुझे भूतों का डर तो नहीं सताता। भूत-

प्रेतों के प्रति मेरे मन में विश्वास भी नहीं है। चलिए, अन्दर जाकर देख लें!'' रंगनाथ ने कहा।

इसके बाद दोनों उस उजड़े महल के भीतर गये। महल की कुछ दीवारें वर्षा में भीगकर ढह गई थीं। उसमें चमगादड़ों ने अपना निवास बना लिया था। सब जगह मकड़ी के जाले फैले हुए थे। देखने में वह महल भयंकर लग रहा था। फिर भी दोनों हिम्मत करके महल के भीतर पहुँचे।

उसी वक़्त महल का प्रधान द्वार टूटकर गिर पड़ा। श्रीगुप्त डर के मारे कांपते हुए बोला, ''सुनो भाई! भूत हम दोनों को यहीं पर प्राणों के साथ गाड़कर रख देंगे। तुम्हारी बजह से इसमें प्रवेश करके मैंने जान पर आफ़त मोल ली है।''

रंगनाथ ने मुस्कुराकर कहा, ''महाशय, यह करनी भूतों की नहीं है। रात को पानी बरसा था, इस कारण दीवारें भीगकर ढह गई हैं। हम भगवान के प्रति शुक्रगुजार हैं कि वे दीवारें हम पर नहीं गिरीं। यकीन मानो, हमें कोई ख़तरा नहीं है।''

''अच्छी बात है! यहाँ से हमारे बाहर निकलने का कोई उपाय करो।'' श्रीगुप्त ने कहा।

रंगनाथ बड़ी युक्ति के साथ टूटी दीवारों पर चढ़कर बाहर निकल आया। उसके पीछे श्रीगुप्त भी आ पहुँचा।

एक जगह रंगनाथ को टूटी दीवार में एक छोटा सा लोटा मिला। उसके मुँह पर तांबे का ढक्कन था। रंगनाथ ने ढक्कन निकालकर लोटे को औंधे मुँह उलट दिया। उसमें से कुछ पत्थर गिरे। श्रीगुप्त ने उन्हें हाथ में तौलकर भांप लिया कि वे क़ीमती पत्थर हैं। उसके मन में लोभ पैदा हुआ कि रंगनाथ को धोखा देकर उन्हें हड़प ले।

''सुनो! सिंह द्वार के भीतर ऐसे तीन या पाँच गाड़कर रख देते हैं। कहा जाता है कि ऐसा करने पर घर के लिए शुभ होता है। सावधानी से देख लो, शायद और मिल जायें!'' श्रीगुप्त ने कहा।

रंगनाथ फिर से टूटी दीवार पर चढ़ गया, थोड़ी देर बाद खाली हाथ लौट आया। इस बीच श्रीगुप्त ने लोटे के भीतर के पत्थर हड़प लिये और उनकी जगह साधारण पत्थर डाल दिये।

रंगनाथ के लौटते ही उन पत्थरों को खण्डहरों में फेंकते हुए श्रीगुप्त बोल उठा- ''ये तो पंच लिंग हैं। किसको चाहिए पत्थर के ये कमबख़्त लिंग?''फिर लोटा रंगनाथ के हाथ थमा दिया।

श्रीगुप्त ने जो पत्थर फेंके थे, उनमें से एक रंगनाथ के पैरों के निकट गिरा। मगर उसके बाजू

में ही रंगनाथ को एक और पत्थर दिखाई दिया जो लोटे के अन्दर का न था।

"एक कमबख़्त लिंग को अपनी यादगारी के रूप में रख लेता हूँ।" यों कहते रंगनाथ ने वह पत्थर हाथ में लिया।

रंगनाथ ने भांप लिया कि श्रीगुप्त ने लोटे के भीतर के पत्थर हड़पने के लिए उसे खण्डहरों में भेज दिया। मगर यह बात प्रकट होने नहीं दी।

इसके बाद दोनों अपने अपने रास्ते चले गये। दूसरे दिन रंगनाथ अपनी तरकारियाँ बेचकर श्रीगुप्त को देखने उसके घर पहुँचा। रंगनाथ को देखते ही श्रीगुप्त घबरा गया। इस पर रंगनाथ का संदेह और बढ़ गया।

शहर में रंगनाथ का एक दोस्त था, जो नाटक खेला करता था। एक जमाने में उसके परिवार के लोग संपन्न थे। उस व्यक्ति का नाम वसंतराज था। रंगनाथ ने सारा समाचार अपने दोस्त वसंतराज को कह सुनाया और बताया कि श्रीगुप्त को अच्छा सबक़ सिखलाना चाहिए। वसंतराज ने इसके वास्ते एक उपाय सोचा।

उसी दिन संध्या को वसंतराज क़ीमती पोशाक पहनकर एक व्यापारी के वेश में श्रीगुप्त की दूकान पर पहुँचा।

श्रीगुप्त उस समय खण्डहरों में प्राप्त पत्थरों का सान धरवा रहा था। वास्तव में वे कच्चे हीरे थे। पुराने होने के कारण मिट्टी में दबकर साधारण पत्थर जैसे दीख रहे थे।

वसंतराज ने श्रीगुप्त से पूछा, "ये पत्थर
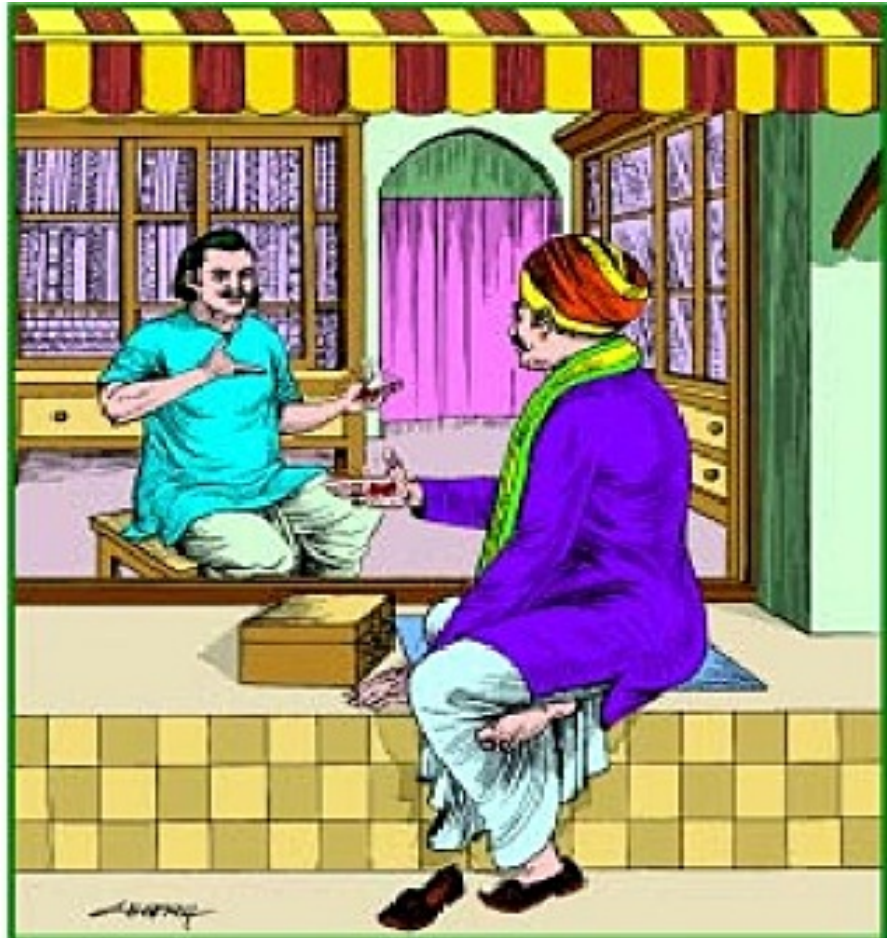
हीरे हैं न? हमारे हीरों की अरब में बड़ी माँग है। मैंने अरब देशों में हीरे बेचकर लाखों रुपये कमाये हैं?"

"हीरों का मूल्य कैसे आंका जाता है?" श्रीगुप्त ने वसंतराज से पूछा।

"इसके वास्ते हीरे की दूरबीन नामक एक उपकरण है। हीरों को पानी के एक बर्तन में डालकर दिन भर रखना चाहिए। आप चाहेंगे तो मैं वह उपकरण एक दिन के लिए आपको दे सकता हूँ।" वसंतराज ने कहा।

इस पर वसंतराज पर श्रीगुप्त का विश्वास जम गया। उसने अपने हीरे वसंतराज को दिखाकर पूछा, "आपकी दूरबीन में इसका मूल्य जाना जा सकता है?" वसंतराज ने हीरे अपने हाथ में लेकर देखा, "ज़रूर जाना जा सकता है। ये पुराने जमाने के हीरे हैं। ये आजकल नहीं मिलते।"

"क्या आप दूरबीन उचित मूल्य पर मुझे बेच सकते हैं?" श्रीगुप्त ने पूछा।

"असंभव है। दुनिया भर में ऐसे उपकरण चार ही हैं। उनमें से एक मेरे पास है।" इन शब्दों के साथ बसंतराज ने अपनी बड़ी पेटी में से एक विभिन्न रंगोंवाली छोटी पेटी खोलकर कहा, "आप अपने हीरे इसमें डाल दीजिए।"

श्रीगुप्त ने हीरे उसमें डाल दिये। बसंतराज ने झट से पेटी बंद की। बड़ी पेटी में से थोड़ा भस्म निकालकर श्रीगुप्त के हाथ दिया और कहा, "आप अपने हाथ से यह भस्म इस पेटी पर छिड़क दीजिए !" श्रीगुप्त ने वैसा किया।

इसके बाद बसंतराज ने बड़ी पेटी में ताला लगाया। छोटी पेटी श्रीगुप्त के हाथ देकर कहा, "इसे बर्तन में रखकर पानी भर दीजिए। मैं कल इसी वक़्त आकर अपनी पेटी ले जाऊँगा।" यों समझाकर बसंतराज चला गया।

बसंतराज सीधे रंगनाथ के घर पहुँचा और हीरे उसे सौंप दिये। रंगनाथ ने कहा, "हम ये हीरे बेचकर आधा आधा बांट लेंगे।"

"एक जमाने में इन्हीं हीरों के वास्ते हत्याएँ हो गई हैं। एक भरा-पूरा परिवार बिखर गया है।" बसंतराज ने कहा।

"यह तुम्हें कैसे मालूम है?" रंगनाथ ने पूछा।

"ये हीरे मेरे दादा ने कमाकर अपने वंश का विनाश मोल लिया है।" बसंतराज ने कहा।

"तब तो तुम्हीं इन्हें रख लो।" रंगनाथ ने उदारतापूर्वक कहा।

"रंगनाथ! यह तुम क्या कहते हो? तुम्हारी ही वजह से इनका पता चला है। हमारे वंश के विनाश के बाद इन हीरों का मेरा शौक जाता रहा। हम इन्हें बेचकर जो धन प्राप्त होगा, आधा आधा बांट लेंगे।" बसंतराज ने कहा।

दूसरे दिन श्रीगुप्त ने पानी में से छोटी पेटी निकालकर देखा। उसमें केवल मामूली पत्थर मिले। श्रीगुप्त यह सोचकर रो पड़ा कि उसके पास जो नकली व्यापारी आया था, उसने भस्म देते वक़्त हीरों की उसकी पेटी बदल दी।

रंगनाथ ने शहर में एक बड़ा महल बनवाया और व्यापार से लाखों रुपये कमाये।

5
चित्र: राजेश
अपराजेय गरुड़
आदित्य रामसिंह की खोज में जाने का निश्चय करता है जिसे उसने आदिवासियों की बस्ती में एक गुप्त उद्देश्य से भेजा था। वह स्वयं आदिवासियों के जाल में फँस जाता है। रामसिंह आदित्य को मुक्त करने के लिए मदद लाता है। राजा राहत की सांस लेता है।
आदित्य अपने आवास में लौट आता है। अरुणा उसके पीछे-पीछे आती है।
कृपया अन्दर आइये।
रामसिंह राजा द्वारा पूछताछ करने के पहले लौट आया। वे नहीं जानते कि क्या-क्या हुआ।
लेकिन उन्होंने मुझे कहा कि कैसे राम सिंह ने तुम्हें खतरे में डाल दिया।
मुझे डर है, शैतान फिर से अपना सिर उठा रहा है। तुम्हें बहुत सावधान रहना चाहिये।
जब मैंने आदिवासियों की बस्ती में उसे भेजा तब मैंने कभी नहीं आशा की थी कि वह मुसीबत में फँस जायेगा।
तभी अचानक जंजीरों में बंधे कुछ आदिवासीय युवकों को लेकर रामसिंह प्रकट हुआ।
मुझे पूरा विश्वास है कि भागवत शक्ति तुम्हारी रक्षा कर रही है...
ये कौन हैं, रामसिंह? ये कहाँ पकड़े गये?
हमारे सिपाहियों ने इन्हें सीमा पर देखा। और उन्होंने हमारे अंगरक्षकों को सौंप दिया।

तुम कौन हो? सीमा तक तुम किस प्रकार पहुँच सके?
हमलोग पहाड़ी गुफाओं के पास रहते हैं। हमारे नेताओं ने हमें सीमा तक पहुँचा दिया।
तुम्हारे नेता कौन हैं?
हम उनके नाम नहीं जानते। उनमें से एक देखने में पुजारी लगता है। दूसरा राजकुमार है। वह दावा करता है कि जिसका राज्याभिषेक हो रहा है वह राजकुमार नहीं है।
इन्हें कारागार में डाल दो! पर इनकी देखभाल ठीक से करो। इन्हें बहकाया गया है।
किन्तु महोदय...
युवकों को ले जाया जा रहा है।
...मैंने सोचा, आप उन्हें सज़ा देना चाहेंगे।
सिर्फ नेताओं को ही सजा मिलनी चाहिये।
यह दूरदर्शिता है।
आशा करती हूँ कि वे सबक सीखेंगे।
राज्याभिषेक के बाद उन्हें आजाद कर देंगे।
आप महल में जानेवाली थीं न?
हाँ, मुझे शीघ्र जाना चाहिये।
मुझे भी राजा के पास वापस जाना चाहिये।
अच्छा! तो रवीन्द्रदेव शान्त बैठा हुआ नहीं है। वह अपने को राजकुमार और सिंहासन का सच्चा उत्तराधिकारी बता रहा है।
आदित्य को पदचाप सुनाई पड़ता है।

यह एक सन्देश लाया है।
यदि आप के पास समय हो तो राजा आप से मिलना चाहते हैं।
मैं शीघ्र ही आता हूँ।
आपने मुझे बुलाया, महाराज?
आदित्य, राजगुरु ने सन्देश भेजा है। तुम्हारा विवाह राज्याभिषेक से पहले होगा। कल सवेरे से अनुष्ठान आरम्भ हो जायेगा। प्रातःकालीन धार्मिक विधियाँ तुम्हारे लिए होंगी।
अरुणा दोपहर के बाद के अनुष्ठानों में रहेगी। उसके बाद, तुम केवल विवाह के दिन, परसों उससे मिल पाओगे।
मैं समझता हूँ, महाराज!
दूसरे दिन, आदित्य गरुड़ की प्रतिमा के सामने आँख बन्द करके बैठता है। प्रतिमा के निकट रखा पंख हवा में ऊपर उठता है और आदित्य के ऊपर मंडराता है। जब वह आदित्य के चारों ओर घूमता है, एक प्रकाश-मण्डल बन जाता है।

आदित्य अचानक जाग पड़ता है। वह चारों ओर नजर दौड़ाता है।
लगता है मैंने अतिरिक्त शक्ति अर्जित कर ली है।
वह पूर्व प्रधान मंत्री के चित्र के सामने खड़ा हो जाता है।
मुझे आप के आशीर्वाद की जरूरत है, पिताश्री!
गरुड़ सदा तुम्हारी रक्षा करेगा, मेरे पुत्र।
बस इतना याद रखना। तुम्हारे सभी कार्यों के पीछे एक ही विचार हो कि वे लोक कल्याण के लिए हों। तुम चन्द्रवंश के हो और तुम इसके योग्य हो, यह तुम सिद्ध कर दो।
यह मैं हमेशा याद रखूँगा, पिताश्री।
अब, कौन आ रहा है?
- क्रमशः

एक अद्‌भुत चामात्कारिक घटना

पलनी पहाड़ियों की ''राजकुमारी''

यह कुरिन्जी फूल के प्रसंग में कहा गया है जो बारह वर्षों में एक बार खि लता है। आखिरी बार यह १९९४ में प्रस्फुटित हुआ था। इसने पंचांग की पाबन्दी के साथ अपना चक्र पूरा कर लिया है। यह जनश्रुत पुष्प तमिलनाडु के कोडईकानल और केरल के मुन्नार के मध्य पलनी पहाड़ियों के ढलानों पर पहले ही अपना नीला आंचल आच्छादित कर चुका है। लोग इसे ''कुरिन्जी का देश'' कहते हैं। इस विस्मयकारी दृश्य को निकट से देखने के लिए १५०० मी.की ऊँचाई पर चढ़ना पड़ता है। कोडईकानल की पहाड़ियों में स्थित कुरिन्जी आण्डवर मन्दिर में इसका एक पौधा है। निस्सन्देह, तुम्हें कभी भी मात्र एक पौधे के फूलों को देखकर सन्तोष नहीं होगा और, अधिक फूलों को देखने की उत्कट अभिलाषा होगी। प्रसंगवश, यह मन्दिर सन् १९३६ में एक अंग्रेज महिला द्वारा निर्मित किया गया था जिसने धर्मपरिवर्तन कर अपना नाम लीलावती रख लिया था। जब उसके पति रामनाथन को नाइट के पद से अलंकृत किया गया, तब से वह लेडी रामनाथन के नाम से लोकप्रिय हो गई।

नील कुरिन्जी निस्सन्देह एक दुर्लभ पौधा है। विश्वास किया जाता है कि पलनी पहाड़ियों के स्वामी मुरुगन ने, जो पलनी मन्दिर में अधिष्ठित हैं, एक आदिवासी कन्या वल्ली से विवाह करने के लिए कुरिन्जी फूलों के खिलने तक प्रतीक्षा की थी। विवाह में, उन्होंने कुरिन्जी फूलों की माला से उसे आभूषित किया था। आश्चर्य की बात नहीं कि इसे ''देवताओं का फूल'' कहा जाता है।

कुरिन्जी सुरक्षा पलनी पहाडी समिति झाड़ीदार पौधों में कुरिन्जी उगाने के लिए एक ''अभयारण्य'' निर्मित करने हेतु कदम उठा रही है। पर्यटकों से निवेदन किया जाता है कि वे फूलों को या टहनियों को न तोड़ें क्योंकि इससे पौधे मुरझा जायेंगे। ''अश्वमार्गों पर ही चलें और आँखों को तृप्त होने दें,'' समिति का कहना है। आप अवश्य इस निश्चय के साथ लौटेंगे कि आप कुरिन्जी देश पुनः २०१८ में देखने आयेंगे।

आप के पन्ने आप के पन्ने

तुम्हारे लिए विज्ञान

स्वाद- यांत्रिकी

एक सामाजिक व्यक्ति और एक कुत्ते में क्या समानता है? बातूनी आदमी अपनी जीभ हिलाता है जबकि कुत्ता अपनी दुम। जिह्वा मानव शरीर में वाक् यान्त्रिकी का मुख्य अंग है। यह चबाने तथा निगलने जैसे कामों के लिए एक महत्वपूर्ण ''अतिरिक्त अंग'' भी है।

शरीर में जीभ एक मात्र मांसपेशी है जिसमें हड्डी का सहारा नहीं है। यह धारीदार मांसपेशियों का एक अन्तर्गुम्फित समूह है जो ग्रन्थियों और चर्बी से अलंकृत है। जीभ की सतह श्लेष्मल झिल्ली से ढके रहने के कारण खुरदरा हो जाती है।

जीभ की सतह में लाखों छोटे-छोटे प्रक्षेपण रहते हैं जिन्हें पैपिला या अंकुरक कहते हैं। इन अंकुरकों में स्वाद-कलिकाएँ होती हैं।

इन कलिकाओं के कारण आहार का, जो भी हम खाते हैं, स्वाद जान पाते हैं। ये जीभ के किनारों पर होती हैं। स्वाद-कलिकाओं का प्रयोग कर कटु, मधुर, खट्टे और नमकीन स्वादों में हम अन्तर कर पाते हैं।

तुम्हारा प्रतिवेश

अपने परिवार को सूंघो

हम सभी जानते हैं कि मछली बुद्धिमान प्राणी है। जो भी हो, ग्लासगो विश्वविद्यालय में वैज्ञानिकों द्वारा की गई हाल की खोजों से पता चला है कि मछलियाँ परिवार में रहना पसन्द करती हैं। परिवार के सदस्यों में विशिष्ट प्रकार की गन्ध होती है। इसी से मछलियों को अपने परिवार को पहचानने में मदद मिलती है। जब, किसी मछली में भिन्न प्रकार की गन्ध पाई जाती है तो तुरन्त उसे बाहरी मान लिया जाता है और परिवार की अन्य मछलियाँ उसके साथ अत्यन्त शत्रुतापूर्ण व्यवहार करने लगती हैं। कुछ वैज्ञानिक विश्वास करते हैं कि बाहरी मछलियों के प्रति इस प्रकार के शत्रुतापूर्ण रवैये का कारण यह हो सकता है कि परिवार के सदस्यों को उनके क्षेत्रीय आधिपत्य पर खतरे का भय महसूस होता है। सैमन मछली अन्य मछलियों की अपेक्षा परिवार की पहचान करने में एक कदम और आगे है। वे वास्तव में अपनी नाकों को हमेशा बाहर रखती हैं।

आप के पन्ने आप के पन्ने

क्या तुम जानते थे?

समुद्र के सैनिक

संसार में सब जगह, जिन्दा रहने के लिए निरन्तर संघर्ष चलता रहता है। समुद्र अपवाद नहीं है। फिर भी, तुम्हें यह विचित्र-सा लगेगा यदि यह कहा जाये कि समुद्र की गहराई में सशस्त्र सिपाहियों के साथ तुम्हारी मुठभेड़ हो सकती है। विश्वास करो या न करो, पर यह सम्भव है।

वैज्ञानिकों ने घोंघे की एक विशिष्ट प्रजाति की खोज की है, जिनके शरीर पर और पैर के आधार पर छोटे-छोटे लोहे के छिलके होते हैं। वे अद्वितीय होते हैं, इस अर्थ में कि ४०,००० से अधिक घोंघा परिवार के किसी सदस्य में भी यह विशेषता नहीं पाई जाती है। अन्य घोंघों की तरह इसमें क्लोमच्छद (आवरण के समान उंगली का कड़ा नाखून) भी नहीं होता। समुद्री प्राणी-वैज्ञानिकों का विश्वास है कि क्लोमच्छद के स्थान पर पैर के आधार में लोहे के छिलके बन गये हैं।

ये घोंघे समुद्र की सतह से लगभग २.५ कि.मी. नीचे रहते हैं।

अपने भारत को जानो

इस महीने की प्रश्नोत्तरी देश के कुछेक पावन स्थलों की तीर्थयात्रा के विषय में है:

१. उत्तर भारत की किस मस्जिद में पैगम्बर मुहम्मद का पवित्र देहावशेष है? वह देहावशेष क्या है?

४. भारत में कहाँ पर चूहों का मन्दिर है?

२. केरल में कहाँ पर भारत का सबसे पुराना यहूदी प्रार्थना भवन स्थित है? यह कब निर्मित किया गया था?

३. प्रथम अग्नि मन्दिर गुजरात में सनजान में निर्मित किया गया था। किस हिन्दू राजा ने पारसी प्रवासियों को मन्दिर बनाने के लिए भूमि मंजूर की थी?

५. कोणार्क के सूर्य मन्दिर में सूर्य भगवान के रथ को खींचते हुए कितने घोड़े दिखाये गये हैं?

(उत्तर ६६ पृष्ठ पर)

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

KALANIKETAN BALU

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

MAHANTESH C. MORABAD

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,

प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई - ६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

एस.सम्पत कुमारी
ए-३, स्वास्थ्य विहार
विकास मार्ग,
नई दिल्ली-११००९२

विजयी प्रविष्टि

देखते बच्चे, बाहरी दुनिया के रंग-ढंग
सयाने, आयने में, हैं देखते निज अंग

'अपने भारत को जानो' प्रश्नोत्तरी के उत्तर :

१. बाल की एक लट; हजरतबल मस्जिद श्रीनगर, कश्मीर में ।
२. मटनचेरी, कोचीन के निकट; सन् १५६८ में ।
३. राजा जादी राम ।
४. राजस्थान में बीकानेर के पास देशमुख में करनी जी का मन्दिर ।
५. सात ।

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 26 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor: B. Viswanatha Reddi (Viswam)

CHANDAMAMA (Hindi) JUNE 2006
Regd. with Registrar of Newspaper for India No. 1087/57
Regd No. TN/CC(S)Dn/163/06-08
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/06-08, Foreign No. 93/06-08